bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2082 युगाब्द 5127 कुल पृष्ठ–32, फरवरी द्वितीय अंक 2025, वर्ष–36 : अंक–17

सुराज की विचार यात्रा

वर्तमान

कमल ज्योति

₹20

डॉ. भीमराव अंबेडकर
सम्मान अभियान
राष्ट्रीय कार्यशाला
8 अप्रैल 2025
केंद्रीय कार्यालय, भाजपा - नई दिल्ली

बूथ समिति की बैठक
दिनांक - 10 अप्रैल 2025 (बृहस्पतिवार)

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
Vartman Kamaljyoti
@bjpkamaljyoti

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने।।

सम्पादकीय

वक्फ संशोधन विधेयक से किसका लाभ?

पुनः एक बार वक्फ विधेयक द्वारा संशोधन हुआ है। एक वर्ग द्वारा जहाँ इसका स्वागत हो रहा है। वहीं देश के कई भाग में विरोध हो रहा है। पं0 बंगाल के कई जिलों में प्रदर्शन हिंसक भी हो रहे हैं। वक्फ सम्पत्तियों पर जहाँ कथित लोगों द्वारा कब्जा उपयोग के उपर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संसदीय इतिहास में हुई सबसे लंबी बहस के बाद ऐतिहासिक वक्फ़ संशोधन विधेयक–2025 पारित हुआ, राष्ट्रपति के हस्ताक्षर और अधिसूचना जारी होने के बाद अब यह कानून बन चुका है। कुछ लोग इसे लेकर सुप्रीम कोर्ट गए हैं जहाँ केंद्र सरकार ने एक कैविएट दाखिल करते हुए कहा है कि बिना उसकी बात सुने कोर्ट कोई फैसला न सुनाए। वक्फ़ संशोधन कानून बन जाने के बाद भी उस पर पक्ष और विपक्ष की राजनीति का दौर जारी है। संसद में बहस व संसदीय गणित में हार जाने के बाद मुस्लिम तुष्टिकरण में संलिप्त ऐसे –ऐसे संगठन याचिकाएं लेकर जा रहे हैं जो राष्ट्रद्रोह के अंतर्गत प्रतिबंधित हैं या उनके खिलाफ राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के तहत मुकदमे चल रहे हैं।

विधेयक के पक्ष व विपक्ष में सभी प्रकार के संगठनों ने अपना कैलेंडर घोषित कर दिया है। अब इस कानून का चाहे जितना विरोध हो यह सुनिश्चित हो गया है कि संसद से पारित यह कानून लागू होगा और सभी नागरिकों पर बाध्यकारी होगा।

संसद के दोनो सदनों में वक्फ़ कानून पर बहस के दौरान गांधी परिवार ने मौन साध लिया था लेकिन अब वह लोग मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए कट्टरपंथी मौलानाओं को भड़काने के लिए अनर्गल प्रलाप कर रहे है। देशभर के कट्टरपंथी तत्व वक्फ़ विरोध के नाम पर देशभर में अराजकता फैला रहे हैं। प्रदर्शन के दौरान संविधान विरोधी बयानबाजी के साथ संसद भवन का घेराव करने की भी धमकी दे रहे हैं किंतु इस बार केंद्र व राज्य सरकारें पूरी तरह से सतर्क हैं।

इस विधेयक के पारित होते समय देश के गरीब मुसलमनों ने भी जश्न मनाया था। यह कानून देश की राजनीति में व्यापक बदलाव लाने वाला कानून हो सकता है। यह नया कानून सामाजिक–आर्थिक न्याय, पारदर्शिता, और समावेशी विकास की प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने वाला है। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए लाभदायक है जो लंबे समय से हाशिये पर हैं। दशकों से चली आ रही वक्फ़ व्यवस्था में जो गरीब और पसमांदा मुसलमान हितों से वंचित थे अब उनको लाभ मिलने जा रहा है। वक्फ़ कानून का पसमांदा, वोहरा व अहमदिया आदि ने समर्थन किया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि वक्फ़ संशोधन कानून, वक्फ़ संपत्तियों के प्रबंधन से से जुड़ी समस्याओं के समाधान के साथ ही वक्फ़ संपत्तियों को अवैध कब्जों और भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने में कारगर साबित होगा। वक्फ़ के नाम पर सबसे अधिक आतंक दक्षिण भारत में मचाया गया क्यांकि वहां कांग्रेस व इंडी गठबंधन की सरकारों का संरक्षण रहा। अभी तक यह लोग जहां की जमीन पर अपना दावा ठोक देते थे वह जमीन उनकी हो जाती थी और उसे किसी प्रकार से भी किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी किंतु अब दी जा सकेगी। वक्फ़ कानून में जो सुधार किये गये हैं वह गरीब मुसलमानों के पक्ष में किये गये हैं। वक्फ़ की 8.72 लाख संपत्तियां अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पा रही थीं क्योंकि उन पर चंद लोगों का कब्ज़ा था।

इस विधेयक के पास होने से जहाँ भ्रम फैलाकर देश में अराजकता का वातावरण तैयार किया जा रहा है। दंगे करने की साजिश रची जा रही है। वहीं केन्द्र सरकार आधिसंख्य प्रदेशों की सरकारें, जनता इसके पक्ष में खड़ी है। इससे कहा जा सकता है। कि यह विधेयक आगे चलकर लोक कल्याणकारी सिद्ध होगा।

सशक्त, समृद्ध, विकसित भारत!

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रामेश्वरम् में ऐतिहासिक जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि रामनवमी का पावन पर्व है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर में रामलला का सूर्य की किरणों ने भव्य तिलक किया है। भगवान श्रीराम का जीवन, उनके राज्य से मिलने वाली सुशासन की प्रेरणा राष्ट्र निर्माण का बड़ा आधार है तमिलनाडु के संगम कालीन साहित्य में भी श्रीराम के बारे में कहा गया है। मैं रामेश्वरम की इस पवित्र धरती से, समस्त देशवासियों को रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

I feel blessed that I could pray at the Ramanathaswamy Temple today- On this special day, I got the opportunity to hand over development projects worth Eight thousand and Three Hundred crore rupees- These rail and road projects will boost connectivity in Tamil Nadu- I congratulate my brothers and sisters in Tamil Nadu for these projects-

This is the land of Bharat Ratna Dr- Kalam- His life showed us that science and spirituality complement each other- Similarly, the new Pamban bridge to Rameswaram brings technology and tradition together- A town that is thousands of years old is being connected by a 21st century engineering wonder- I thank our engineers and workers for their hard work- This bridge is India's first vertical lift railway sea bridge- Big ships will be able to sail under it- Trains will also be able to travel faster on it- I just flagged off a new train service and also a ship a short while ago- Once again, I congratulate the people of Tamil Nadu for this project-

For many decades, there was a demand for this bridge- With your blessings, we got the privilege of completing this work- Pamban bridge supports both Ease of Doing Business and Ease of Travel- It will have a positive impact on the lives of the lakhs of people- The new train service will improve the connectivity from Rameswaram to Chennai and other parts of the

country- This will benefit both trade and tourism in Tamil Nadu- New job and business opportunities will also be created for the youth-
बीते 10 वर्षों में भारत ने अपनी इकॉनॉमी का साइज़ दोगुना किया है। इतनी तेज ग्रोथ का एक बड़ा कारण हमारा शानदार मॉर्डन इंफ्रास्ट्रक्चर भी है। बीते 10 सालों में हमने रेल, रोड, एयरपोर्ट, पोर्ट, बिजली, पानी, गैस पाइपलाइन, ऐसे इंफ्रास्ट्रक्चर का बजट करीब 6 गुणा बढ़ाया है। आज देश में बहुत तेजी से मेगा प्रोजेक्ट्स पर काम हो रहा है। आप नॉर्थ में देखेंगे, तो जम्मू कश्मीर में दुनिया के सबसे ऊंचे रेल ब्रिज में से एक, चिनाब ब्रिज बना है। West में जाएंगे, तो मुंबई में देश का सबसे लंबा सी ब्रिज, अटल सेतु बना है। ईस्ट में जाएंगे, तो असम के बोगीबील ब्रिज के दर्शन होंगे। और साउथ में आते हैं, तो दुनिया के गिने–चुने वर्टिकल लिफ्ट ब्रिज में से एक, पंबन ब्रिज का निर्माण पूरा हुआ है। इसी तरह, ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर भी तैयार हो रहे हैं। देश की पहली बुलेट ट्रेन पर तेजी से काम चल रहा है। वंदे भारत, अमृत भारत और नमो भारत जैसी आधुनिक ट्रेनें रेल नेटवर्क को और आधुनिक बना रही हैं।

जब भारत का हर रीजन आपस में कनेक्ट होता है, तो डेवलप्ड नेशन बनाने का रास्ता मजबूत होता है। दुनिया के हर डेवलप्ड नेशन, हर डेवलप्ड रीजन में यही हुआ है। आज जब भारत का हर स्टेट आपस में कनेक्ट हो रहा है, तो पूरे देश का potential सामने आ रहा है। इसका बेनिफिट भी देश के हर रीजन को हो रहा है, हमारे तमिलनाडु को हो रहा है।

विकसित भारत के सफर में तमिलनाडु का बहुत बड़ा रोल है। मैं मानता हूं, तमिलनाडु का सामर्थ्य जितना ज्यादा बढ़ेगा, भारत की ग्रोथ उतनी ही तेज होगी। बीते दशक में तमिलनाडु के विकास के लिए, 2014 से पहले की तुलना में तीन गुणा ज्यादा पैसा सेंटर से दिया गया है। जब INDI Alliance की सरकार थी, DMK उस सरकार में विराजमान थे, तब जितना पैसा मिला, उससे तीन गुना मोदी सरकार ने दिया है। इससे तमिलनाडु की इकोनॉमिक और इंडस्ट्रियल ग्रोथ में बहुत बड़ी मदद मिली है।

विकसित भारत के सफर में तमिलनाडु का बहुत बड़ा रोल है। मैं मानता हूं, तमिलनाडु का सामर्थ्य जितना ज्यादा बढ़ेगा, भारत की ग्रोथ उतनी ही तेज होगी।

तमिलनाडु का इंफ्रास्ट्रक्चर भारत सरकार की priority है। बीते एक दशक में तमिलनाडु का रेलवे बजट, सेवन टाइम्स से ज्यादा increase किया गया है। इसके बावजूद भी कुछ लोगों को बिना कारण रोते रहने की आदत है, वो रोते रहते हैं। 2014 से पहले, रेल प्रोजेक्ट्स के लिए हर साल सिर्फ only nine hundred crore rupees ही मिलते थे और आपको पता है उस समय INDI Alliance के मुख्य कर्ताधर्ता कौन थे, ये आपको पता है। इस वर्ष, तमिलनाडु का रेल बजट, six thousand crore rupees से ज्यादा है। भारत सरकार, यहां के 77 रेलवे स्टेशन्स को मॉडर्न भी बना रही है। इसमें रामेश्वरम का स्टेशन भी शामिल है।

Last ten years में, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत गांवों के रोड्स और हाईवेज़ के क्षेत्र में भी बहुत सारा काम हुआ है। 2014 के बाद तमिलनाडु में केंद्र सरकार की मदद से, 4000 किलोमीटर रोड्स बनी हैं। चेन्नई पोर्ट को कनेक्ट करने वाला, elevated corridor, शानदार इंफ्रास्ट्रक्चर का एक बेहतरीन उदाहरण बनेगा। आज भी करीब 8000 crore rupees के रोड प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। ये प्रोजेक्ट्स, तमिलनाडु के अलग अलग डिस्ट्रिक्स के साथ ही, आंध्र प्रदेश के साथ भी कनेक्टिविटी बेहतर करेंगे।

चेन्नई मेट्रो जैसा मॉडर्न पब्लिक ट्रांसपोर्ट भी, तमिलनाडु में ease of travel को बढ़ा रहा है। हमें याद रखना है, जब इतने सारे इंफ्रास्ट्रक्चर का काम होता है, तो इससे हर सेक्टर में नई जॉब्स भी क्रिएट होती हैं। मेरे नौजवानों को रोजगार के नए अवसर मिलते हैं।

बीते दशक में भारत ने सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी रिकॉर्ड निवेश किया है। मुझे खुशी है कि तमिलनाडु के करोड़ों गरीब परिवारों को इसका बेनिफिट मिल रहा है। बीते 10 साल में 4 करोड़ से ज्यादा पक्के घर, देश भर के गरीब परिवारों को मिले हैं और इसमें, पीएम आवास योजना के तहत twelve lakh से ज्यादा पक्के घर, यहां तमिलनाडु में मेरे गरीब परिवार के भाई–बहनों को मिले हैं। पिछले 10 सालों में गांवों में करीब Twelve करोड़ परिवारों तक पहली बार पाइप से वॉटर, नीर पहुंचाया गया है। इसमें, one crore eleven lakh families, मेरे

तमिलनाडु की हैं। इनके घर में पहली बार टैप वॉटर पहुंचा है। इसका बहुत बड़ा लाभ तमिलनाडु की मेरी माताओं–बहनों को मिला है।

देशवासियों को क्वालिटी और सस्ता इलाज देने से, ये हमारी सरकार की कमिटमेंट है। आप देखिए, आयुष्मान योजना के तहत, तमिलनाडु में वन करोड़ से ज्यादा ट्रीटमेंट्स हो चुके हैं। इससे तमिलनाडु के इन परिवारों के eight thousand crore rupees जो उनकी जेब में से खर्च होना था, वो खर्च बच गया है। मेरे तमिलनाडु के भाई–बहनों के जेब में eight thousand crore rupees, ये बहुत बड़ा आंकड़ा है। तमिलनाडु में fourteen hundred से अधिक, जन–औषधि केंद्र हैं। ये मैं जरा तमिलनाडु का बताता हूं, यहां जन–औषधि केंद्र में eighty percent डिस्काउंट पर दवाएं मिलती हैं। इन सस्ती दवाओं से भी लोगों की जेब में seven hundred crore rupees, मेरे तमिलनाडु भाई–बहनों की जेब seven hundred crore rupees की सेविंग हुई है और इसलिए मैं तमिलनाडु के मेरे भाई–बहनों को कहूंगा, अगर आपको दवाई खरीदनी है, तो जन–औषधि केंद्र से खरीदीए। आपको एक रुपये की चीज 20 पैसे में, 25 पैसे में, 30 पैसे में मिल जाएगी।

हमारा प्रयास है कि देश के नौजवानों को डॉक्टर बनने के लिए broad जाने की मजबूरी ना रहे। बीते सालों में तमिलनाडु को 11 नए मेडिकल कॉलेज मिले हैं।

देशभर में कई राज्यों ने मातृभाषा में डॉक्टरी की शिक्षा आरंभ की है। अब गरीब से गरीब मां का बेटा–बेटी भी जिसने अंग्रेजी नहीं पढ़ी है, वो भी डॉक्टर बन सकते हैं। मैं भी तमिलनाडु सरकार से आग्रह करूंगा कि वो तमिल भाषा में डॉक्टलरी के कोर्सेस चालू करें, ताकि गरीब मां के बेटे–बेटी भी डॉक्टर बन सकें।

भारत की ग्रोथ में हमारी ब्लू इकोनॉमी का बहुत बड़ा रोल होने वाला है। इसमें तमिलनाडु की ताकत, दुनिया देख सकती है। तमिलनाडु का हमारा फिशरीज़ से जुड़ा समाज, बहुत मेहनती है।

टैक्स पेयर का दिया हर पैसा, गरीब से गरीब के काम आए, यही गुड गवर्नेंस है। तमिलनाडु के लाखों small farmers को पीएम किसान सम्मान निधि के तहत, लगभग twelve thousand crores rupees दिए गए हैं। तमिलनाडु के तिउमते को पीएम फसल बीमा स्कीम से भी fourteen thousand eight hundred crore rupees का क्लेम मिला है।

भारत की ग्रोथ में हमारी ब्लू इकोनॉमी का बहुत बड़ा रोल होने वाला है। इसमें तमिलनाडु की ताकत, दुनिया देख सकती है। तमिलनाडु का हमारा फिशरीज़ से जुड़ा समाज, बहुत मेहनती है। तमिलनाडु के फिशरीज इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए स्टेट को जो भी मदद चाहिए, वो केंद्र सरकार दे रही है। पिछले 5 साल में, पीएम मत्स्य संपदा स्कीम के तहत भी, तमिलनाडु को करोड़ों रुपए मिले हैं। हमारी कोशिश यही है कि मछुआरों को ज्यादा फैसिलिटीज़ मिले, आधुनिक सुविधाएं मिलें। चाहे सीवीड पार्क हो या फिर फिशिंग हार्बर और लेंडिंग संेटर हों, केंद्र सरकार यहां सैकड़ों करोड़ रुपए इन्वेस्ट कर रही है। हमें आपकी रक्षा–सुरक्षा की भी चिंता है। भारत सरकार फिशरमैन के हर संकट में उनके साथ खड़ी है। भारत सरकार के प्रयासों से बीते 10 साल में Three Thousand Seven Hundred से ज्यादा फिशरमैन श्रीलंका से वापस लौटे हैं। इनमें से Six Hundred से अधिक फिशरमेन तो पिछले एक साल में फ्री हुए हैं और आपको याद होगा, कुछ हमारे मछुआरे साथियों को फांसी की सजा हुई थी, उनको भी हम जिंदा भारत लौटकर के लाकर के उनके परिवार को सुपुर्द किया है।

आज दुनिया में भारत के प्रति आकर्षण बढ़ा है। लोग

भारत को जानना चाहते हैं, भारत को समझना चाहते हैं। इसमें भारत के कल्चर का, हमारी सॉफ्ट पावर का भी बड़ा रोल है। Tamil language और हैरीटेज, दुनिया के कोने–कोने तक पहुंचे, इसके लिए भी सरकार लगातार कोशिश कर रही है। मैं तो कभी–कभी हैरान हो जाता हूं, तमिलनाडु के कुछ नेताओं की चिट्ठीयां जब मेरे पास आती हैं, कभी भी कोई नेता तमिल भाषी में सिग्नेचर नहीं करता है, अरे तमिल का गौरव हो, मैं सबसे कहूंगा कम से कम तमिल भाषा में अपने सिग्नेचर तो करो। मैं मानता हूं कि ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी में इस ग्रेट ट्रेडिशन को हमें और आगे ले जाना है। मुझे विश्वास है कि रामेश्वरम और तमिलनाडु की ये धरती, हमें ऐसे ही निरंतर नई ऊर्जा देती रहेगी, नई प्रेरणा देती रहेगी। और आज भी देखिए कितना सुपर संयोग है, रामनवमी का पवित्र दिवस है, रामेश्वरम की धरती है और यहां पर जिस पंबन ब्रिज का आज उद्घाटन हुआ, सौ साल पहले जो पुराना ब्रिज था, उसको बनाने वाला व्यक्ति गुजरात में जन्म लिया था और आज सौ साल के बाद, उसका नया ब्रिज बनाने का उद्घाटन करने के बाद भी उस व्यक्ति को मिला है, वो भी गुजरात में पैदा हुआ है।

आज जब रामनवमी है, रामेश्वर की पवित्र भूमि है, तब मेरे लिए कुछ भावुक पल भी है। आज भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस है। सशक्त, समृद्ध और विकसित भारत के जिस लक्ष्य को लेकर हम चल रहे हैं, उसमें बीजेपी के हर एक कार्यकर्ता का परिश्रम है। तीन–तीन, चार–चार पीढ़ियां, मां भारती की जय–जयकार के लिए खप गई हैं। मेरे मिल गर्व की बात है कि भारतीय जनता पार्टी के उस विचार ने, भारतीय जनता पार्टी के लाखों कार्यकर्ताओं के परिश्रम ने आज हमें देश की सेवा करने का अवसर दिया है। आज देश के लोग बीजेपी सरकारों की गुड गवर्नेंस देख रहे हैं, राष्ट्रहित में लिए जा रहे, वो निर्णय देख रहे हैं और हर हिंदुस्तानी का सीना चौड़ा हो रहा है। देश के हर राज्य, हर कोने में जिस तरह बीजेपी के कार्यकर्ता जमीन से जुड़कर कार्य करते हैं, गरीबों की सेवा करते हैं, वो देखकर मुझे गर्व होता है। मैं भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता हूं, मैं उन्हें अपनी शुभकामनाएं देता हूं। एक बार फिर आप सभी को तमिलनाडु के इन सभी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स के लिए बहुत–बहुत बधाई देता हूं।

नंडरि! वणक्कम! मीनडुम संधिप्पोम!

वैचारिक वैशिष्ठ ''सबका साथ, सबका विकास''

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने केन्द्रीय कार्यालय में भारतीय जनता पार्टी के 46वें स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए भाजपा के करोड़ों कार्यकर्ताओं को स्थापना दिवस एवं श्रीरामनवमी की कोटि कोटि शुभकामनाएं दी। श्री नड्डा ने पार्टी ध्वज का ध्वजारोहण किया श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीन दयाल उपाध्याय की प्रतिमाओं पर श्रद्धापूर्वक पुष्पांजलि अर्पित की।

श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने **'सबका साथ–सबका विकास'** के मूलमंत्र के साथ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सिद्धांतो को जमीन पर उतारा है। राष्ट्र के पुनर्निर्माण में एक राजनैतिक आंदोलन के रूप में इस सफर में भाजपा के सभी कार्यकर्ता अपने आप को शामिल करते हैं। यह यात्रा 1951 में भारतीय जनसंघ नाम के राजनीतिक आंदोलन से शुरू हुई। राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए यह आंदोलन कुछ समय के लिए जनता पार्टी में शामिल हुआ। फिर 6अप्रैल1980 को अपने वैचारिक वैशिष्ठ को लेकर इस आंदोलन ने भारतीय जनता पार्टी का रूप ले लिया। एक नई वैकल्पिक राजनीतिक संस्कृति को लेकर यह आंदोलन चलता रहा। जनसंघ के दीये को अलविदा कहते हुए पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कालजयी शब्दों का प्रयोग किया था और 6 अप्रैल को श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने एक विचारधारा वाले लोगों को एक साथ लाकर भारतीय जनता पार्टी का आह्वान किया था। उन दिनों इलस्ट्रेटर वीकली और दिनमान नाम की राजनैतिक मैगजीन हुआ करती थी। जब भाजपा कार्यकर्ता आर्काइव्स में जाकर उस समय के लेख पढ़ेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उस समय घने बादल घिरे हुए थे और किसी भी परिस्थिति में सूरज की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती थी, वैसी परिस्थिति में भी भाजपा के शीर्ष नेताओं को विश्वास था कि उनका रास्ता सही है। उसी विश्वास से ताकत लेकर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता आगे बढ़ते रहे और इस आयाम तक पहुंचे हैं कि आज भाजपा के कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि संसद में विपक्षी दल भी कहते हैं कि ये दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। आज विपक्ष भी भाजपा पर कटाक्ष इस अलंकार के साथ करते हैं।

7 अप्रैल से 13 अप्रैल तक भाजपा का एक-एक नेता एवं कार्यकर्ता 5 लाख बूथ पर पहुंचेगा और 1 लाख बस्तियों में पहुंचकर भारतीय जनता पार्टी की अलख जगाएगा।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी वोट की खातिर कभी डगमगाई नहीं और सत्ता को पाने के लिए कभी विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया। भाजपा एकमात्र राजनीतिक पार्टी है जिसने वैचारिक अधिष्ठान पर अपने आप को सदैव अडिग रखा है। 22–25 अप्रेल 1965 के दौरान पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने **"एकात्म मानवदर्शन"** का व्याख्यान दिया था और जनसंघ कालीकट अधिवेशन में एकात्म मानववाद के सिद्धांत को लेकर आगे बढ़ा। इस सिद्धांत का मजाक उड़ाया जाता था, क्योंकि कार्ल मार्क्स के चश्मे से देखने वाले लोगों द्वारा किसी चीज को एकात्मता और समावेशिता से देखा जाना अकल्पनीय था। कांग्रेस धीरे–धीरे अपने वैचारिक क्षरण की ओर चल पड़ी थी, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने एकात्म मानववाद को आगे बढ़ाया और भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार बनने के बाद अंत्योदय के माध्यम से इस सिद्धांत की जड़ों को मजबूत किया गया। इसी अंत्योदय को आगे बढ़ाते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" के मंत्र का पालन किया।

श्री नड्डा ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे और श्री जगन्नाथ राव जोशी जैसी महान विभूतियों की एक लंबी शृंखला भारतीय जनता पार्टी के आज दिख रहे ताज की मजबूत नींव हैं। श्रद्धेय

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1948 में एक देश में दो विधान एवं दो संविधान होने के विरोधी अपने वैचारिक अधिष्ठान को लेकर जवाहर लाल नेहरू के कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था। 1951 में भारतीय जनसंघ की यात्रा शुरू हुई, 1953 में उन्होंने 'एक देश में दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं चलेंगे' नामक आंदोलन के साथ सत्याग्रह किया और श्रीनगर की जेल में उन्होंने संदेहास्पद स्थितियों में अपना बलिदान दे दिया। उनकी पूज्य माता जी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को चिट्ठी लिखकर इसकी जांच की मांग की थी लेकिन नेहरू ने इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया था जिस पर जनसंघ के लाखों कार्यकर्ताओं ने कहा था कि यह लड़ाई जारी रहेगी। 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान के दशकों बाद 6 अगस्त 2019 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री श्री अमित शाह की रणनीति के तहत भाजपा सरकार ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि 1987–88 में पालमपुर अधिवेशन एक प्रस्ताव पारित हुआ जो शब्दशः था– **"हम राम जन्मभूमि मंदिर बनने के रास्ते को प्रशस्त करेंगे"** और प्रजातांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके राम मंदिर बनेगा। 1987 के बाद एक लंबी लड़ाई लड़ी गई और आज राम नवमी के दिन लाखों श्रद्धालु राम लला की भव्य मूर्ति को निहार रहे हैं। भाजपा ने कभी भी पार्टी हित में नहीं, बल्कि **"राष्ट्र प्रथम"** की भावना के साथ राष्ट्रहित में काम किया है। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सरकार ने शाह बानो केस में मुस्लिम तुष्टीकरण के आगे अपने घुटने टेक दिए थे। सुप्रीम कोर्ट लगातार मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुरीति से मुक्त करने की बात कहती रही, लेकिन किसी ने इस कुरीति को समाप्त करने की हिम्मत नहीं जुटाई। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मलेशिया, टर्की और इंडोनेशिया सहित सभी मुस्लिम देशों में कहीं भी तीन तलाक नहीं है लेकिन भारत में यह कुरीति जिंदा थी। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने लाखों मुस्लिम बहनों को तीन तलाक की कुप्रथा के मुक्त कराया। जवाहर लाल नेहरू और लियाकत अली के बीच भारत में मुस्लिम और पाकिस्तान में हिंदुओं की रक्षा करने के लिए समझौता हुआ था। यह अलग बात है कि पाकिस्तान में हिंदुओं की जनसंख्या 22 प्रतिशत से घटकर मात्र 1.8 फीसदी रह गई है। ये लोग राजनीतिक रूप से प्रताड़ित होते रहे और जो लोग इस प्रताड़ने का कारण भारत आए, उन्हें भाजपा सरकार ने नागरिकता दी है। सभी मुस्लिम देशों में सरकारें ही वक्फ बोर्ड

1951 में श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा भारतीय जनसंघ के नाम से शुरू किया गया यह राजनीतिक आंदोलन आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का रूप ले लिया है।

जनसेवा ही राष्ट्र सेवा

भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस पर पूरे प्रदेश में पार्टी कार्यकर्ताओं ने बूथ स्तर पर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम आयोजित किए। प्रदेश में पार्टी कार्यालयों पर पार्टी का झंडा फहराया तथा पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने अपने आवास तथा प्रतिष्ठानों पर पार्टी का झंडा फहराकर और मिष्ठान खिलाकर स्थापना दिवस मनाया। राज्य मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह चौधरी और प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने पार्टी का ध्वज फहराया और स्थापना दिवस की सभी को बधाई दी। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष ब्रज बहादुर भारद्वाज, प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ल, अनूप गुप्ता, संजय राय, राम प्रताप सिंह, प्रदेश मंत्री शंकर गिरी, अर्चना मिश्रा, शिवभूषण सिंह, मनीष दीक्षित, मनीष शुक्ल, भारत दीक्षित, अतुल अवस्थी, लक्ष्मण सिंह, राज्य मंत्री विजयलक्ष्मी गौतम, राज्यसभा सांसद बृजलाल सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि करोड़ो कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम और बलिदान के बाद आज भारतीय जनता पार्टी की पहचान विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल के रूप में बनी है। श्री राम नवमी और पार्टी के स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ता की सर्वोच्च प्राथमिकता राष्ट्र प्रथम और जन सेवा की है। हमारी पार्टी का गठन जिन उद्देश्यों और संकल्पों के साथ हुआ था, उन्हें पूरा करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ हमने कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जम्मूकश्मीर से धारा 370 को खत्म करना हो या अयोध्या में भव्य श्री राममंदिर का निर्माण हमने अपने संकल्पों को पूरा करने का काम किया और जनता से किये वायदों से हम पीछे नहीं हटे। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने पार्टी कार्यकर्ताओं का आवाहन किया कि वे पार्टी की विचारधारा के अनुरूप राष्ट्र सेवा व जनसेवा में सदैव अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहे।

को चला रही हैं और भाजपा सरकार वक्फ बोर्ड को सरकार के प्रशासन में लाने की बजाय सिर्फ नियमों के दायरे में ला रही है। भाजपा सरकार सुनिश्चित करेगी कि वक्फ बोर्ड की आय एवं संपत्ति मुस्लिम समुदाय की शिक्षा और उत्थान पर लगायी जाए। भाजपा ने देश को अधिनायक वाद से बाहर निकाला है। आज राजपथ, कर्तव्य पथ बन गया, वहां श्री सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति स्थापित हो गई और नौसेना के ध्वज से गुलामी के निशान हटा दिए गए। भाजपा का प्रयास सदैव से भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने का रहा है।

श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री कुशाभाऊ ठाकरे और श्री जगन्नाथ राव जोशी जैसी महान विभूतियों की एक लंबी श्रृंखला भारतीय जनता पार्टी के आज दिख रहे शिखर की मजबूत नींव है।

श्री नड्डा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी विचारों के आधार पर चलने वाली पार्टी है। भारतीय जनता पार्टी के आज लोकसभा में 240 सांसद, 98 से अधिक राज्यसभा सांसद और 1600 से अधिक विधायक हैं। प्रदेशों में 13 विशुद्ध भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं, 7 प्रदेशों में एनडीए की सरकार है। करोड़ों कार्यकर्ताओं के योगदान से आज भारतीय जनता पार्टी विचारों के आधार पर बड़े पैमाने पर अनुसरण की जाने वाली पार्टी बनी है। आज 13.5 करोड़ से अधिक लोग भाजपा से जुड़े हैं, 10 लाख से अधिक सक्रिय भाजपा कार्यकर्ता हैं, 6 लाख बूथों पर भाजपा के बूथ अध्यक्ष हैं। गुजरात में छठी बार भाजपा सरकार बनी, गोवा व हरियाणा में तीसरी बार सरकार में है, मध्य प्रदेश में चौथी बार सरकार में है, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, त्रिपुरारा, मणिपुर व असम में दूसरी बार सरकार में हैं और 27 वर्षों के बाद आज भारतीय जनता पार्टी दिल्ली में भी सरकार में है। भाजपा एक मात्र ऐसी पार्टी है जो वैज्ञानिक ढंग से आगे बढ़ी है, चुनाव जीतना, संगठन को मजबूत करना भी एक विज्ञान है। वैचारिक दृढ़ता के साथ बिना समझौता करे आगे बढ़ना ही भारतीय जनता पार्टी का संकल्प है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, आयुष्मान भारत, स्वच्छता अभियान से लेकर उज्ज्वला योजना तक आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने गरीब, दलित, शोषित, पीड़ित, युवा और महिलाओं की चिंता की है। इसलिए आवश्यक है कि भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और पार्टी की नींव के रूप में कार्य करने वाले भाजपा नेताओं को पढ़ें व जानें। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की संकल्पना "विकसित भारत 2047" को पूरा करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को मजबूती से कार्य करने की आवश्यकता है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि कल यानी 7 अप्रैल से 13 अप्रैल तक भाजपा का एक–एक नेता एवं कार्यकर्ता 5 लाख बूथ पर पहुंचेगा और 1 लाख बस्तियों में पहुंचकर भारतीय जनता पार्टी की अलख जगाएंगे। बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर जी की जयंती के उपलक्ष्य में 14 अप्रैल से 25 तक संविधान गौरव दिवस भी मनाया जाएगा और संविधान निर्माण में बाबा साहब के योगदान से लोगों को अवगत कराया जाएगा। कांग्रेस ने जिस तरह से संविधान की मूल आत्मा पर कुठाराघात किया है, भाजपा उसका भी पर्दाफाश करेगी। श्री नड्डा ने भाजपा कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि बूथ पर जाने का दौरान जनसंघ और भाजपा के स्थापना काल के कार्यकर्ताओं को ढूंढकर उनके घर जाएं। श्री नड्डा ने कहा कि दिल्ली में वे स्वयं 98 वर्ष की आयु वाली जन संघ की कार्यकर्ता से मिलेंगे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नड्डा ने पुनः भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं।

1953 में श्रद्धेय डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को सार्थक करते हुए 6 अगस्त 2019 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गृह मंत्री श्री अमित शाह की रणनीति के तहत भाजपा सरकार ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया।

इस कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री बी.एल. संतोष, राष्ट्रीय महासचिव श्री दुष्यंत गौतम, श्री विनोद तावड़े, श्री अरुण सिंह एवं डॉ राधा मोहन दास अग्रवाल, राष्ट्रीय सचिव श्री अनिल के. एंटनी, दिल्ली मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा, नई दिल्ली लोकसभा सांसद सुश्री बांसुरी स्वराज, भाजपा राष्ट्रीय मीडिया के प्रमुख एवं सांसद श्री अनिल बलूनी और भाजपा राष्ट्रीय मीडिया के सह प्रमुख डॉ. संजय मयूख उपस्थित रहे।

समग्र विकास हेतु ''एक राष्ट्र एक चुनाव''

लोकतंत्र में अपनी पंसद का जनप्रतिनिधि चुनना जनता का अधिकार है, लेकिन बार–बार चुनाव जनता पर अनावश्यक बोझ डालता है। यह राजनीतिक अस्थिरता को न सिर्फ जन्म देता है बल्कि देश के अंदर विकास की संभावनाओं को बाधित करता है और सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। राजनीतिक अस्थिरता कभी भी देश को संप्रभुता संपन्न और विकसित देश की परिकल्पना को साकार करने में सहभागी नहीं बन सकती है। बार–बार का इलेक्शन देश और प्रदेश की जीडीपी को प्रभावित करता है। विकास के लिए चालू योजनाओं में बैरियर का काम करता है और लोकतंत्र के प्रति लोगों के आकर्षण को भी कम करता है।

सीएम योगी लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित एक राष्ट्र–एक चुनाव अभियान के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों की तरफ से आयोजित राज्यस्तरीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के **''वन नेशन वन इलेक्शन''** विजन को साकार करने की आवश्यकता है, जो 2019 में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा अनावरण के दौरान घोषित हुआ था।

कांग्रेस की अंदरूनी टूट से बिगड़ी व्यवस्थाः योगी ने कहा कि यह विचार पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई का भी था, जिन्होंने राजनीतिक स्थिरता को सुशासन, सुरक्षा और विकास की पहली शर्त माना था। 1952 से 1967 तक लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ हुए। लेकिन कांग्रेस की अंदरूनी टूट के बाद यह प्रथा समाप्त हो गई। 1967 के बाद सरकारें भंग की गईं, राष्ट्रपति शासन लगा और राजनीतिक अस्थिरता ने देश को भटकाया। 1980 के दशक में भी यह मुद्दा उठा, लेकिन आगे नहीं बढ़ सका। अब पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में बनी समिति की सिफारिशों और जनजागरण के जरिए इसे 2034 तक लागू करने का रोडमैप तैयार किया जा रहा है। विधानसभाओं के कार्यकाल को समायोजित कर एक साथ चुनाव संभव हों, जिससे 3.5 से 4.5 लाख करोड़ रुपये के सालाना खर्च को विकास कार्यों में लगाया जा सके।

माफियाराज ने देश और प्रदेश के विकास को रोकाः सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में हर जनपद में एक समानांतर सरकार चलती थी जो कानून और संवैधानिक प्रोटोकॉल की परवाह नहीं करती थी। संसाधनों पर लूट और माफियाराज उनका जन्मसिद्ध अधिकार बन गया था। इस अस्थिरता ने प्रदेश को देश की सातवीं अर्थव्यवस्था तक पहुंचा दिया, जबकि 1947 में यह राष्ट्रीय औसत के बराबर थी। माफिया और गुंडागर्दी ने प्रदेश के विकास को बाधित किया और पहचान का संकट खड़ा हो गया था।

लोकतंत्र विरोधी बार–बार चुनाव से उठा रहे फायदाः 2014 से पहले देश भी इसी अस्थिरता का शिकार था, जिससे विश्वास और पहचान का संकट पैदा हुआ, लेकिन आज भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और उत्तर प्रदेश आठ साल में प्रगति के पथ पर है। यह राजनीतिक स्थिरता का परिणाम है। उन्होंने माफिया और अराजकता को बढ़ावा देने वाले तत्वों को 'लोकतंत्र विरोधी' बताते हुए कहा कि ये लोग बार–बार चुनाव से फायदा उठाते हैं। विपक्ष ने महाकुंभ का दुष्प्रचार किया सीएम ने कहा कि 13 से 26 जनवरी के बीच प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ ने दुनिया को मंत्रमुग्ध कर दिया। 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आए जो लोकतंत्र का सबसे बड़ा महोत्सव बन गया। पिछली सरकारों ने इस आयोजन को उपेक्षित रखा. 2007 और 2013 में अव्यवस्था और गंदगी थी। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, अरुणाचल, मणिपुर, जम्मू–कश्मीर से लेकर उत्तराखंड तक के लोग आए। विपक्ष ने दुष्प्रचार किया, लेकिन जनता ने इसे नकार दिया। लोग पैदल चलकर त्रिवेणी स्नान के लिए आए।

2034 तक एक साथ चुनाव का लक्ष्यः सीएम योगी ने लोगों से **''वन नेशन वन इलेक्शन''** के समर्थन में जनजागरण की अपील की। उन्होंने कहा कि विपक्ष दुष्प्रचार करेगा, लेकिन हमें जवाब देना चाहिए कि 'देश हमारा है, विकास हमारा है, राजनीतिक स्थिरता हमारी जरूरत है। सोशल मीडिया पर इसकी चर्चा बढ़ानी होगी। अनुमान लगाया कि बार–बार चुनाव से 3.5 से 4.5 लाख करोड़ रुपये का बोझ जनता पर पड़ता है, जो विकास कार्यों में लगाया जा सकता है। 2034 तक एक साथ चुनाव का लक्ष्य है।

भगवान श्रीराम एवं निषादराज का मिलन स्थल : "श्रृंगवेरपुर"

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज में प्रभु श्री राम के प्रिय सखा निषादराज गुह्य की जयंती के अवसर पर 579 करोड़ की 181 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। उन्होंने भगवान श्री राम एवं राजा निषाद से जुड़ी कथाओं तथा 'एक जनपद, एक उत्पाद' (ओडीओपी) पर आधारित प्रदर्शनी का भी शुभारंभ किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि महाकुंभ की तैयारी के दौरान वक्फ बोर्ड ने दावा किया था कि कुंभ की भूमि उनकी है। यह माफिया बोर्ड बन गया था। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने इसकी मनमानी पर लगाम लगा दी है।

उत्तर प्रदेश में किसी भी प्रकार की माफियागिरी नहीं चलेगी। सीएम योगी ने कहा कि वक्फ बोर्ड से संबंधित एक महत्वपूर्ण अधिनियम लोकसभा में पारित हो चुका है और जल्द ही राज्यसभा में भी पास होगा, जिससे यह केवल कल्याणकारी कार्यों तक सीमित रहेगा। उन्होंने कहा कि निषाद राज के पौराणिक भूमि पर कब्जा और जगह–जगह शहरों पर भी वक्फ के नाम पर कब्जे किए गए।

प्रधानमंत्री मोदी के प्रति आभार जताते हुए कहा कि यह उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है कि महाकुंभ भव्य और दिव्य हुआ। महाकुंभ 2025 की सफलता प्रयागराज की नई पहचान का आधार बना है। प्रयागराज पर मां गंगा की असीम कृपा है। महाकुंभ में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आए। दुनिया का कौन सा देश और भारत का कौन सा प्रदेश ऐसा था, जो यहां नहीं पहुंचा? त्रिवेणी संगम में स्नान कर हर कोई पुण्य का भागीदार बना। अब प्रयागराज को वाराणसी के बगल में बताने की जरूरत नहीं, यह अपनी वैश्विक पहचान बना चुका है। प्रयागराज का अर्थ है महामिलन स्थल। यहां गंगा–यमुना–सरस्वती का मिलन है, तो भगवान राम और निषाद राज का मिलन भी है।

योगी ने कहा कि महाकुंभ की सफलता सनातन धर्म की शक्ति का प्रतीक है। इतना भव्य आयोजन केवल राम भक्त और राष्ट्रनिष्ठ लोग ही कर सकते हैं। यह मां गंगा, भगवान राम, निषाद राज और द्वादश माधव की कृपा का परिणाम है। महाकुंभ के बहाने प्रयागराज का चौतरफा विकास हुआ है। हनुमान जी कॉरिडोर, अक्षयवट कॉरिडोर, मां सरस्वती कॉरिडोर, पातालपुरी कॉरिडोर, महर्षि भारद्वाज कॉरिडोर, नागवासुकी कॉरिडोर और द्वादश माधव कॉरिडोर ने प्रयागराज को नई पहचान दी है। यह स्मार्ट सिटी से आगे एक प्रभावशाली शहर बन चुका है।

योगी आदित्यनाथ ने श्रृंगवेरपुर में भगवान श्रीराम और निषाद राज की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने कहा कि निषाद राज पार्क भगवान राम और निषाद राज की मित्रता का भव्य स्मारक है। उन्होंने पार्क का निरीक्षण किया और कहा कि हजारों वर्ष पहले इसी पावन धरा पर भगवान राम ने कदम रखा था। निषाद राज ने मित्रता का धर्म निभाते हुए भगवान राम को गंगा पार कराई और चित्रकूट तक उनका साथ दिया। आज वही मित्रता भाजपा और निषाद पार्टी के बीच दिख रही है। यह इतिहास फिर दोहराया जा रहा है।

महाकुंभ में योगदान देने वाले प्रशिक्षित गाइड, नाविकों और होम स्टे संचालकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

मजहबी आरक्षण संविधान विरोधी

हृदयनारायण दीक्षित

गरीबी मजहबी नहीं होती। स्थाई भी नहीं होती। जो आज गरीब हैं या कल तक गरीब थे, वह अपने प्रयत्नों व राष्ट्र राज्य की आर्थिक कार्यवाही से धन संपन्न हो जाते हैं। इसलिए गरीबों, वंचितों के लिए रक्षोपाय तय करते समय पंथ, मजहब, का विचार अनुचित है। अलगाववादी है और संविधान विरोधी भी है। बावजूद इसके कर्नाटक राज्य सरकार ने सरकारी ठेकों में मुसलमानों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण का अधिनियम बनाया है। सामान्यतया आरक्षण वंचितों को संपन्न बनाने का उपकरण रहा है। लेकिन कर्नाटक सरकार के मुस्लिम आरक्षण से संपन्न और शक्तिशाली मुसलमानों को और शक्तिशाली बनाने का इरादा है। यह पहला मौका नहीं है। मुस्लिम वोट बैंक तुष्टीकरण कथित सेकुलर राजनीति का स्थाई मिशन है। संविधान विरोधी होने के कारण मजहब आधारित आरक्षण के प्रस्तावों को न्यायालयों ने कई दफा असंवैधानिक बताया है। तो भी मजहबी तुष्टिकरण का खतरनाक खेल जारी है। भाजपा ने इस आरक्षण का तीव्र विरोध किया है। कांग्रेस बैकफुट पर है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने जरूरी संविधान संशोधन की बात भी कही है।

मजहबी आरक्षण का यह प्रयास पहला नहीं है। कर्नाटक में ही इसके पहले भी इसी तरह के प्रयास हुए हैं। संविधान विरोधी यह कोशिश कामयाब नहीं हुई। वर्ष 2005 में केन्द्र ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में 50 प्रतिशत मुस्लिम आरक्षण की घोषणा की थी। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री अर्जुन सिंह ने इसकी तरफदारी की थी। जमीयत उलेमा ए हिन्द ने विशाल रैली में मुस्लिम आरक्षण की मांग की थी। सोनिया गांधी ने भी प्रतिबद्धता प्रकट की थी। मुस्लिम यूनिवर्सिटी के आरक्षण प्रस्ताव को लेकर अर्जुन सिंह की आलोचना हुई थी। यूनिवर्सिटी लंबे समय तक अलगाववाद के लिए राष्ट्रवादियों के निशाने पर रही है। मोहम्मद करीम छागला कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मंत्री थे। वह भी सांप्रदायिक तत्वों के निशाने पर आए। उन्होंने अपनी पुस्तक **'रोजेस इन दिसंबर'** में लिखा कि, "मैंने स्पष्ट कहा था कि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय संस्था है।" कट्टरपंथी मुसलमानों ने छागला का भी विरोध किया। मोहम्मद अली जिन्ना ने इस यूनिवर्सिटी को इस्लामी शस्त्रागार बताया था। आगा खां ने इसे पाकिस्तानी विचारधारा का जन्म स्थान बताया था। 1980 के दशक में ऑल इंडिया मुस्लिम सम्मेलन में विधायिका और नौकरियों में मजहब आधारित आरक्षण मांगा गया था। 1983 में मुस्लिम लीग ने केरल में मुस्लिम आरक्षण की यही मांगे दोहराई थीं। 1991 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और जनता दल ने मुस्लिम आरक्षण का चुनावी वादा किया था। आंध्र प्रदेश की सरकार ने भी मुस्लिम आरक्षण किया था। संविधान की उद्देशिका और अनुच्छेद 15 व 16 में धर्म और पंथ आधारित भेद का निषेध है। मुस्लिम आरक्षण अनुच्छेद 15 व 16 का उल्लंघन है।

संविधान निर्माता पंथ और मजहब आधारित विशेषाधिकारों के विरोधी थे। सभा के सदस्य मजहब आधारित भारत विभाजन से आहत थे। मोहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों को अलग राष्ट्र मानते थे। वे भारत के भीतर दो राष्ट्र देखते थे। अलग मुस्लिम मुल्क की मांग पर भयंकर रक्तपात हुआ था। लाखों लोग मारे गए थे। देश बंट गया था। संविधान सभा इसी वातावरण में संविधान बना रही थी। मुस्लिम आरक्षण का विषय सभा में आया। सभा ने गहन अध्ययन के लिए अल्पसंख्यक अधिकारों सम्बंधी समिति का गठन किया था। सरदार पटेल समिति के सभापति थे। पटेल कमेटी ने अनेक पक्षों से साक्ष्य लेकर (25 मई 1949) सभा में अपनी रिपोर्ट रखी। सभा में जेड. एच. लारी ने मुस्लिम आरक्षण की मांग करते हुए कहा कि, "आपको अनुसूचित जातियों के हितों की चिन्ता है, लेकिन मुस्लिम हितों की नहीं।" एक मुस्लिम सदस्य नजीरूद्दीन अहमद ने कहा कि, "किसी प्रकार के रक्षण स्वस्थ राजनैतिक विकास के प्रतिकूल हैं।

संविधान निर्माता पंथ और मजहब आधारित विशेषाधिकारों के विरोधी थे। सभा के सदस्य मजहब आधारित भारत विभाजन से आहत थे। मोहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों को अलग राष्ट्र मानते थे।

पंथ मजहब आधारित निर्णय उचित नहीं होते। जगत नारायण लाल ने कहा कि, "भारत एक सेकुलर राज्य

होगा। अब आरक्षण की मांग नहीं होनी चाहिए।" सभा में दो दिन बहस हुई। एक मुस्लिम सदस्य बी. पोकर ने धमकाते हुए मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की और कहा, "मुसलमान शक्तिशाली और संगठित हैं। यदि उन्हें लगा कि उनकी आवाज नहीं सुनी गई, तो वह उद्दण्ड हो सकते हैं।" संविधान सभा में भी मुसलमानों की उद्दण्डता की धमकी ध्यान देने योग्य है। डॉ. आम्बेडकर ने उनकी उद्दण्डता का उल्लेख कई बार किया है। डॉक्टर आम्बेडकर मजहबी अलगाववाद के विरोधी थे। ए. आयंगर प्रख्यात विधिवेत्ता ने कहा, "मेरा अनुमान था कि पाकिस्तान प्राप्त करने के बाद मुस्लिम दोस्त अपना व्यवहार बदलेंगे।" सभा के उपाध्यक्ष एच. सी. मुखर्जी ने दो टूक बात की और कहा, "हम एक राष्ट्र चाहते हैं। तो मजहब के आधार पर कोई मानता नहीं दे सकते। संविधान सभा के कुछ मुस्लिम सदस्य मौलाना हजरत मोहानी, तजम्मुल हुसैन, नजीरुद्दीन अहमद आदि पंथ आधारित आरक्षण के पक्ष में नहीं थे। सभापति सरदार पटेल ने बहस का उत्तर दिया और कहा, "समिति के अध्ययन का निष्कर्ष है कि मुस्लिम बंधुओ ने आरक्षण की मांग पर बल नहीं दिया है।" कई मुस्लिम सदस्यों ने आपत्ति की। कहा गया कि मुस्लिम ताकतवर हैं। संगठित हैं। बादशाह रहे हैं। उन्हें कमजोर न मानें। इस पर पटेल ने कहा, "आपका समाज संगठित है। शक्तिशाली है। तो आप विशेष सुविधाएं क्यों मांगते हैं। जो अल्पमत देश विभाजन करा सकता है। वह अल्पमत नहीं हो सकता। अतीत भूलिए। अगर आपको ऐसा असंभव लगता है तो आप अपने विचार के अनुसार किसी सुंदर स्थान पर चले जाइए।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "सभी वर्ग अपनी अपनी विचारधारा के अनुसार गुट बना सकते हैं, लेकिन पंथ, मजहब आधारित अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। मैं यहां तक कहता हूं कि जो रक्षण रह गए हों, वह भी समाप्त कर दिए जाएं। वर्तमान परिस्थितियों में अनुसूचित जाति के आरक्षण को हटाना सही नहीं होगा।" संविधान निर्माता मजहब आधारित विशेषाधिकारों के विरोधी थे। पंडित नेहरू ऐसे आरक्षण और वर्गीकरण के विरुद्ध थे ही। पटेल मजहबी अलगाववाद और पंथिक अस्मिता के विरोधी थे। संविधान सभा की मसौदा समिति के सभापति डॉ. आम्बेडकर सभी तरह की सांप्रदायिकता के विरोधी थे। मूलभूत प्रश्न है कि क्या नेहरू के मजहबी आरक्षण विरोधी विचार का प्रभाव सोनिया गांधी, राहुल गांधी आदि कांग्रेस जनों पर भी नहीं पड़ता? क्या डॉक्टर आम्बेडकर के नाम पर वोट मांगने वाले दल समूहों को मुस्लिम आरक्षण का विरोधी नहीं होना चाहिए। संविधान सभा में डॉक्टर आम्बेडकर, राधाकृष्णन, आयंगर आदि प्रतिष्ठित विद्वान मजहबी अस्मिता के घातक परिणामों के जानकार थे। पंडित नेहरू भी बहुपठित थे। डॉ. आम्बेडकर और उनके सामने दुनिया के कई देशों के आरक्षण सम्बंधी मॉडल थे। वे भारत की सामाजिक संरचना से भिन्न हैं। भारत में जाति आधारित भेदभाव रहे हैं। संविधान निर्माताओं ने व्यथित, वंचित अनुसूचित जातियों को आरक्षण दिया। वह भी सुनिश्चित अवधि के लिए। मुस्लिम किसी भी देश में सामाजिक आर्थिक दृष्टि से वंचित नहीं हैं। वे भारत में लगभग 600 साल तक सत्ताधीश रहे हैं। वे सामाजिक दृष्टि से पिछड़े नहीं हैं। इस सब के बावजूद वोट बैंक तुष्टीकरण के लिए बार–बार मुस्लिम आरक्षण की असंवैधानिक मांग की जाती है। संविधान निर्माताओं ने अपनी ओर से इस विषय का निस्तारण कर दिया था। भारतीय राष्ट्रराज्य को भी इसका अंतिम निस्तारण करना चाहिए। जो स्वयं संविधान नहीं मानते, उन्हें राष्ट्र सर्वोपरिता समझाना कठिन है।

बांग्लादेशी घुसपैठ के खिलाफ कदम!

मृत्युंजय दीक्षित

संसद के बजट सत्र– 2025 में बजट के अतिरिक्त भी कई ऐतिहासिक विधेयक पारित हुए हें जिनमें से एक है आब्रजन और विदेशियों विषयक विधेयक –2025। यह विधेयक भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाने वाला तो है ही साथ ही भारत की आंतरिक व वाह्य सुरक्षा तंत्र और आर्थिक तंत्र को भी मजबूत बनाने वाला भी है। जब यह विधेयक अधिसूचित होकर पूरे भारत में लागू हो जायेगा तब बांग्लादेशी व रोहिंग्याओं की अवैध घुसपैठ सहित अनेक प्रकार के अपराधों पर भी लगाम लग सकेगी।

इस विधेयक के कानून बन जाने के बाद कोई भी विदेशी नागरिक पहले की तरह भारत में घुस कर, भारत के किसी भी हिस्से में जाकर निवास करते हुए भारत विरोधी गतिविधियों में संलिप्त नहीं हो पाएगा। अब सीमा पार करने वाले हर व्यक्ति का पूरा डाटा एकत्र किया जायेगा। अभी भारत आने वाले विदेशी नागरिकों का कोई डाटा उपलब्ध नहीं है। यह विधेयक भारत की एकता, अखंडता तथा सुरक्षा के लिए अतयंत महत्वपूर्ण है। इस बिल के लागू हो जाने के बाद अवैध रोहिंग्या/बांग्लादेशी घुसपैठ पर रोकथाम ही नहीं लगेगी अपितु ऐसे अराजक तत्व जो समाज में घुल मिलकर छोटे मोटे अपराधों में संलिप्त हो रहे हैं तथा समाज का वातावरण प्रदूषित करते हुए लवजिहाद व धर्मान्तरण जैसी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं उनसे भी निपटा जा सकेगा।

इस विधेयक पर संसद के दोनों सदनों में चर्चा के दौरान स्पष्ट हुआ कि भारत में अवैध घुसपैठ की समस्या कितना विकराल रूप ले चुकी है। भारत के सभी मेट्रो शहर अवैध अराजक तत्वों के निशाने पर हैं। भारत के अधिकांश सीमावर्ती क्षेत्रों तथा समस्त पूर्वी राज्यों जिनमें असम और पश्चिम बंगाल प्रमुख हैं में यह समस्या नासूर बन चुकी है। पश्चिम बंगाल के तीन सीमावर्ती जिलों की डेमेग्राफी अवैध घुसपैठ के कारण बदल चुकी है। गृह राज्यमंत्री नित्यांद राय ने जब सदन में बताया कि बांग्लादेशी घुसपैठ की सबसे अधिक समस्या कांग्रेस शासित राज्यों कर्नाटक, झारखंड, तेलंगना तथा तृणमूल कांग्रेस शासित राज्य पश्चिम बंगाल में है क्योंकि यहां की राज्य सरकारें सहयोग नहीं कर रही हैं तब विपक्षी दलो ने हंगामा करते हुए सदन का बहिष्कार कर दिया। गृहराज्य मंत्री ने अवगत कराया कि बंगाल सरकार सीमा पर बाड़ नहीं लगाने दे रही है साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सीमा पर टीएमसी के कार्यकर्ता ही बीएसएफ के कार्यों में बाधा डालने का काम कर रहे हैं जिसके कारण बांग्लादेशी घुसपैठ पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। लोकसभा में बहस के दौरान ही गृहमंत्री अमित शाह ने स्पष्ट कर दिया कि भारत कोई "धर्मशाला" नहीं हैं।

विधेयक पर बहस के दौरान घुसपैठ व शरणार्थी शब्द को स्पष्ट किया गया क्योंकि विपक्षी दलों के सांसद तुष्टिकरण की विकृत राजनीति के कारण इन दोनों शब्दों का घालमेल कर रहे थे। ये विपक्षी सांसद इस विधेयक को वसुधैव कुटुंबकम की भवना से परे बताकर भ्रम व अराजकता की राजनीति करने का प्रयास कर रहे थे। किंतु सरकार ने अपने तर्कों से विपक्ष को बेनकाब कर दिया जिसके परिणामस्वरूप वे राज्यसभा में हंगामा करते हुए सदन से बाहर चले गये।

इस नये कानून में विदेशी अधिनियम 1946, पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम 1920 तथा विदेशियों का

पंजीकरण अधिनियम 1939 और आब्रजन (वाहक दायित्व) अधिनियम 2000 को निरस्त करते हुए एक नया व्यापक कानून बनाने की आवयकता की पहचान करते हुए नया आब्रजन और विदेशी विधेयक 2025 लाया गया है। नये कानून का एक उद्देश्य यह भी है कि कानूनों की बहुलता और अतिव्यापन से बचा जाये तथा विदेशियों से संबंधित मामलों को विनियमित किया जाए, जिसमें वीजा की आवश्यकता, पंजीकरण और अन्य यात्रा संबंधी दस्तावेज (पासपोर्ट) आदि शामिल है। इस नये कानून के माध्यम से भारत में प्रवेश करने और बाहर जाने वाले सभी लोगों के लिए सभी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया जा सकेगा।

नये कानून के अनुसार किसी भी विदेशी को बिना वैध पासपोर्ट या दस्तावेजों के भारत आने पर 7 साल की जेल और 10 लाख रुपये का जुर्माना देना होगा। गलत जानकारी देने या दस्तावेजों में गड़बड़ी करने पर 3 साल की जेल और 3 लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान किया गया है। भारत में बिना वैध पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेजों के माध्यम से प्रवेश करने पर तुरंत हिरासत में लिया जायेगा। अब इस विधेयक के नये नियमों के अनुरूप अगर कोई मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है तो अधिक कड़ी कार्यवाही की जायेगी। यह विधेयक केंद्र सरकार को उन स्थानों का नियंत्रण करने का अधिकार भी देता है जहां विदेशियो काआना जाना लगा रहता है। इसके तहत मालिक को परिसर को बंद करने, निर्दिष्ट शर्तों के साथ इसके उपयोग की अनुमति देने या सभी या निर्दिष्ट वर्ग के विदेशियों को प्रवेश देने से मना करने का अधिकार का दिया गया है।

निरस्त किये गए कानून की कमियों का लाभ उठाकर ही बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक भारत आ रहे थे क्योंकि उस क़ानून में उनकी जांच करने तथा व्यापक पूछताछ की कोई स्पष्ट व्यवस्था नहीं थी। इसी कारण से आज लाखों की संख्या में अवैध नागरिक भारत में रह रहे हैं और अब वह राष्ट्रीय समाजिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं।

गृहमंत्री अमित शाह ने सदन में अपने भाषण के दौरान कहा कि हम नियम बनाकर अवैध घुसपैठ को रोक रहे हैं। हमारी सीमा पर कुछ संवदेनशील स्थान हैं, सेना के अड्डे हैं, उनको दुनियाभर के लिए खुला नहीं छोड़ सकते। पहले भी घुसपैठियो को रोका जा सकता था किंतु कोई नियम नहीं था अतः हमने नियम बनाने का साहस किया है। इस नये कानून से भारत आने वाले विदेशी नागरिकों की जानकारी पुख्ता होगी। सुरक्षा की दृष्टि से ड्रग्स कार्टल, घुसपैठियों की कार्टल, हवाला व्यापारियों को समाप्त करने की व्यवस्था इस विधेयक में की गई है।

गृहमंत्री अमित शाह ने सदन को बताया कि सबसे अधिक बांग्लादेशी व रोहिंग्याओं की घुसपैठ बंगाल से हो रही है। अब तक जितने घुसपैठिये पकड़े गये हैं, उनके आधार कार्ड बंगाल के 24 परगना क्षेत्र के है। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता ही इन लोगों के अवैध कागज बनवा रहे हैं। नये कानून में अवैध कागज बनवाने वाले भी सजा के दायरे में आ गये हैं। नया कानून 36 धाराओं में निहित है। सभी को कानूनी रूप दिया गया है। सदन में गृहमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि अब जो भारत में केवल भारत के हित के लिए आयेगा वहीं यहां पर रह सकेगा। अब भारत धर्मशाला नही है। सरकार उन लोगों का स्वागत करने के लिए तैयार है जो पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा या व्यापार के लिए भारत आना चाहते हैं सरकार केवल उन लोगों को भारत आने से रोकेगी जिनके इरादे गलत हैं और जो हमारे लिए खतरा पैदा करेंगे उनसे गंभीरता से निपटा जायेगा।

गृहमंत्री अमित शाह ने सदन में अपने भाषण के दौरान कहा कि हम नियम बनाकर अवैध घुसपैठ को रोक रहे हैं। हमारी सीमा पर कुछ संवदेनशील स्थान हैं, सेना के अड्डे हैं, उनको दुनियाभर के लिए खुला नहीं छोड़ सकते।

इस कानून के माध्यम से भारत में गैरकानूनी तरीके से घुसना और यहां बसना मुश्किल हो जायेगा। रोहिंग्या/बांग्लादेशी घुसपैठ अब चुनाव में भी एक बड़ा मुददा बन गई है। दिल्ली में तो आम आदमी पार्टी कई विधायक बांग्लादेशी व रोहिंग्याओं का फर्जी पासपोर्ट, आधार कार्ड व राशन कार्ड आदि बनवा रहे थे जिनकी जांच चल रही है। केंद्र की सरकार को पूर्ण विश्वास है कि नक्सलवाद, आतंकवाद की तरह आने वाले समय में रोहिंग्या/बांग्लादेशी घुसपैठ का भी समाधान हो जायेगा और भारत तीव्रता के साथ विकास के पथपर अग्रसर हो सकेगा।

महापुरुषों ने की भारतीय संस्कृति की रक्षा : भागवत

कबीरधाम मुस्तफाबाद में आश्रम हो रहे सत्संग में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये राष्ट्रीसय स्वधयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत ने कहा कि मैं, मेरा परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये मैं यदि कुछ कर रहा हूं तो सब कुछ कर रहा हूं। ऐसे चार कायदे हो जाते हैं तो इसका विचार करके ऐसा जीवन भारतीयों का बने, यही आवश्यरकता है। हम सब सुखी होंगे। हमारे देश का अमर ज्ञान सबको मिले। हमारा संविधान भी कहता है कि भावनाओं को जो स्वीरकार हो। भाषाएं, समस्याऐं, जीवन सब अलग हैं। मगर हम एक हैं। हमारी एक माता हैं। उनका नाम है भारत माता। उस भारत माता की आत्माह को आगे रखना ही सबका धर्म है। सभी महापुरुषों ने भारतीय संस्कृनति की रक्षा की है। मुस्तफाबाद गांव के प्रतिष्ठित कबीरधाम आश्रम में हुआ यह आयोजन धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणास्पद रहा। उन्हों्ने आगे कहा कि हमारे पास आज भी परम्पीरा है। भौतिक सुख को पाने के बाद भी हमने सबकुछ खोया नहीं। चित्तव शुद्ध रखने के बाद भगवान आपके पास जरूर आएंगे। समाज की व्यावस्थाी आज भी परिवार की वजह से चल रही है। हर परिवार कुछ न कुछ कर रहा है। बाहर व्यूक्ति को ही ईकाई मानते हैं और हमारे यहां परिवार को ही ईकाई माना जाता है। इसीलिए यह कर्तव्यब है कि उस ईकाई को आग बढ़ाना। अगला दायित्वे है अपने देश की भलाई के लिये कार्य करना। हमारे यहां देने वाले को माता कहते हैं। इसीलिए गौ, नदी आदि जो हमें कुछ न कुछ देती हैं उन्हें हम माता कहते हैं। कृतज्ञता की यही भावना हमें अपने देश के प्रति भी रखनी चाहिये ताकि हम भी इसके लिये कुछ कर सकें। इसे कुछ दे सकें। यही अमरत्व का मार्ग है। उन्हों ने संदेश देते हुए कहा कि आत्मभशुद्धि से विश्व शुद्धि की ओर हम सबको अग्रसर होना होगा।

उन्होने कहा कि विज्ञान के कारण विकास हुआ और पर्यावरण का विनाश हुआ। सभी चिंता कर रहे हैं। सबको पता है कि भारत ने विकास तो किया मगर कुछ भी कभी बर्बाद नहीं किया। अंग्रेजों के आने के बाद हमने केमिकल से खेती जितनी की वही खराब हुई है। बाकी सब ठीक है। विदेशों को भी पता है कि भारत के पास सारी विद्या है। आत्माक की उपासना करते हुये हम स्ववयं को शुद्ध कर सकते हैं। उन्हों ने कहा कि छोटी–छोटी नौकाओं में बैठकर हमारे पूर्वज विदेश गये। उन्हों ने सभ्य ता का प्रचार किया। सारी चीजों का सम्माटन करो। हमारे संतों ने इसे प्रत्यठक्ष रूप से प्रयुक्तन किया। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे सेवा, समर्पण और राष्ट्र निर्माण के मार्ग पर अग्रसर हों।

उन्होंने यह भी कहा कि कबीर की वाणी केवल भक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना की पुकार है। उनका चिंतन आज के समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है। संघ भी इसी चेतना को लेकर समाज में समरसता, संतुलन और संस्कारों का संचार कर रहा है।इस बीच सरसंघचालक ने कहा कि पुरानी कहावत है कि जर्मनी में एक भारतीय गया। जर्मनी में लोगों ने कहा कि भारत से चतुर्वेदी आ रहे हैं। सबने सोचा कि चार वेदों का कोई ज्ञाता भारत से आ रहा है। उनका स्वागत जर्मन ने संस्कृत में स्वागत किया। मगर जब जर्मनी के लोगों ने वेद के विषय में कुछ बताने को कहा, तो पता चला कि वह तो वेद छोड़यि संस्कृ त तक नहीं जानते थे। अतः हमें स्व यं को भारतीयता का बोध कराना होगा। भारतीय संस्कृवति को अपनाना होगा। उन्हों ने कहा कि हमने दुनिया को सबकुछ सिखाया। हमने सबको बहुत कुछ बताया मगर कभी घमंड नहीं किया। हमने कभी कुछ पेटेंट नहीं कराया। यही दान की भावना हमें भारतीय बनाती है। उन्होंने कहा कि भारत का संदेश, प्रेम बांटने का संदेश है। संघ प्रमुख ने कहा कि जबसे सृष्टि बनी है, तबसे मनुष्य सुख की खोज में है। परंतु सच्चा सुख आत्मा की शांति में है, न कि भोग की लालसा में, उपभोग जीवन का लक्ष्य नहीं

होना चाहिए, बल्कि आत्मकल्याण, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ज्ञान, विज्ञान, गुण और अध्यात्म जैसे तत्व भारत की देन हैं और अब समय आ गया है कि भारत विश्व को पुनः देने वाला देश बने, एक बार फिर विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय संस्कृति को जीवन में उतारने वाले संत ही समाज के सच्चे पथप्रदर्शक हैं। चाहे पंथ हो या सम्प्रहदाय – सभी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। हमारी उपासना ऐसी हो जो सत्य तक पहुँचाए। सबके प्रति मन में भक्ति का भाव हो। अपना अंतर्मन शुचितापूर्ण रहे। यही धर्म है। उपासना से हमें ऐसा ही जीवन प्राप्त् होता है। दूसरा दायित्वच है स्वा्र्थविहीन जीवन जीना। अपने परिवार को समाजोपयोगी बनाना। जीवन ऐसा हो जिसमें भोग और स्वार्थ की दौड़ नहीं हो। हमारा तीसरा कर्तव्य है अपने देश और समाज के लिये कुछ न कुछ कार्य करना। अपने आस–पास जो गरीब बच्चे हैं तो उनकी पढ़ाई भी हो, यह हमारी चिंता होनी चाहिए। चौथा दायित्वा है समाज के प्रति कुछ करने का भाव। हमारा जीवन मात्र हमारी वजह से नहीं चल रहा है। चौथा दायित्व है समाज के अंदर के सारे भेद दूर करते हुए सारा स्वा र्थ विसर्जित करत हुए देश–दुनिया से मित्रता करते हुए जोड़ दें। उनसे मित्रता करते हुए न कि उन्हेंए जीतकर। इसी के साथ उन्होंतने कहा, 'स्विय ं, परिवार, समाज और देश को एकता के सूत्र में बांधते हुए हमें प्रेम का संदेश जन–जन तक पहुंचाना होगा। विश्वक मंगल की कामना करनी होगी। यही यहां उपस्थित सभी आगंतुकों से मेरी अपेक्षा है।'

'संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उनके साथ कबीरधाम के प्रमुख पूज्य असंग देव महाराज उपस्थित रहे। संत असंग देव महाराज ने अपने भावपूर्ण संबोधन में कहा कि मैं डॉ. मोहन भागवत के माता–पिता को नमन करता हूँ जिन्होंने ऐसे संस्कारी पुत्र को जन्म दिया, जो मातृभूमि, गौ माता, धरती माता, भारत माता और गुरु के प्रति गहन श्रद्धा और सेवा–भाव रखते हैं। कबीरधाम के प्रमुख संत असंग दास ने कार्यक्रम का आरम्भम करते हुये सरसंघचालक जी के माता–पिता को नमन करने के बाद कहा कि धरती माता, गौमाता यही हमारी संस्कृहति है। उन्हों ने कहा कि यह स्था न पहले से ही पवित्र रहा है मगर मोहन भागवत जी के आगमन के पश्चा त यह स्थाहन अब और मनभावन हो जाएगा। उन्होंयने कहा कि धरती पर वही माता पुत्रवती है जिसका पुत्र लोकभावना के साथ कार्य करता है। इस अवसर पर उन्हों्ने कबीरधाम मुस्तफाबाद में नवीन आश्रम का भूमि पूजन भी किया। संघ प्रमुख की कबीरधाम के प्रमुख संत असंग दास से भी शिष्टादचार भेंट हुई। संघ प्रमुख इसके पहले वाराणसी और मिर्जापुर में संतों से भेंटवार्ता कर चुके हैं। इस विशेष अवसर पर कबीरधाम आश्रम में भारी संख्या में श्रद्धालु, संत, ग्रामीणजन और स्वयंसेवक उपस्थित हुए। आश्रम प्रशासन द्वारा दूरदर्शिता दिखाते हुए दूरदराज़ के श्रद्धालुओं के लिए विशेष स्क्रीन की व्यवस्था भी की गई, जिससे वे सत्संग का लाभ उठा सकें। आयोजन के दौरान पूरा आश्रम परिसर भक्ति, राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक चेतना से सराबोर हो गया।

यह सत्संग केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं था, बल्कि यह भारत की आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक प्रबल कदम था। कबीर की विचारधारा और संघ की कार्यशैली का संगम, भारतीय आत्मा को और अधिक मजबूती देने की दिशा में प्रभावशाली प्रयास सिद्ध हो रहा है।

इस कार्यक्रम में क्षेत्र प्रचारक अनिल, प्रांत प्रचारक कौशल, क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष, क्षेत्र शारीरिक प्रमुख अखिलेश, वरिष्ठ् प्रचारक ओमपाल, प्रांत प्रचारक प्रमुख यशोदानन्द , क्षेत्र संघचालक कृष्णा मोहन, प्रांत संघचालक सरदार स्वर्ण सिंह, प्रांत कार्यवाह प्रशांत जी, प्रचारक राजकिशोर, प्रचारक अशोक केडिया एवं विभाग प्रचारक अभिषेक आदि उपस्थित रहे।

क्रान्तिकारी मंगल पाण्डेय

रमेश शर्मा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 1857 की क्रान्ति को सब जानते हैं। यह एक ऐसा सशस्त्र संघर्ष था जो पूरे देश में एक साथ हुआ। इसमें सैनिकों और स्वाभिमान सम्पन्न रियासतों ने हिस्सा लिया। असंख्य प्राणों की आहूतियाँ हुईं थी। इस संघर्ष का सूत्रपात करने वाले स्वाभिमानी सिपाही मंगल पाण्डेय थे। अपने स्वत्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिये न केवल गाय की चर्बी वाले कारतूस लेने से इंकार किया अपितु दो अंग्रेज सैन्य अधिकारियों को गोली भी मार दी।

ऐसे इतिहास प्रसिद्ध क्राँतिकारी मंगल पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के अंतर्गत नगवा नामक

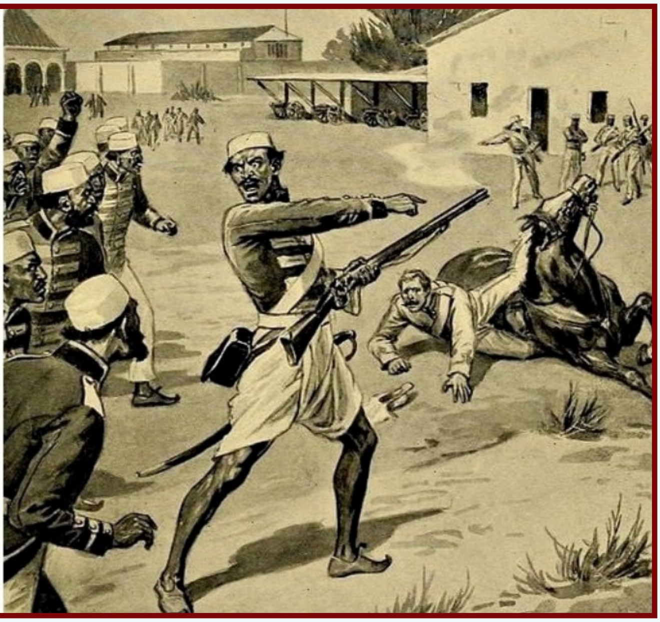

गांव में 19 जुलाई 1827 को हुआ था। इनके पिता दिवाकर पांडे था भारतीय परंपराओ से जुड़े थे। घर में पूजा पाठ का वातावरण था। मंगल पाण्डेय की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। वे स्वस्थ कद काठी थे। वे 1849 में 22 वर्ष की आयु में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना मे बंगाल नेटिव इन्फेंट्री की 34 वीं बटालियन मे भर्ती हो गए और प्रशिक्षण के बाद बंगाल भेज दिये गये। इस बंगाल नेटिव इन्फ्रेन्ट्री अंग्रेजों के विरुद्ध होने वाले विद्रोह को दबाने में लगाया गया था। इस बीच उन्हें असम और बिहार के वनवासी क्षेत्रों में भेजा गया। अपनी विभिन्न पदस्थापना में उन्होने अंग्रेज अफसरों का भारतीयों के प्रति शोषण और अपमान जनक व्यवहार को देखा था इससे उनके मन में अंग्रेजों के प्रति एक गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उनकी इन्फ्रेन्ट्री का केन्द्र बंगाल का बैरकपुर था। बीच बीच में बैरकपुर आते थे। तभी नये कारतूसों को लेकर चर्चा चली। यह बात प्रचारित हुई कि इन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी है। यह एनफ़ील्ड बंदूक थी जो 1853 में सिपाहियों के लिये आई थी। लेकिन दो तीन साल स्टोर में पड़ी रही और 1856 में सिपाहियों को दी गई। यह ०.557 कैलीबर की इंफील्ड बंदूक थी। इससे पहले ब्राउन बैस बंदूक सिपाहियों के पास थी जो बहुत पुरानी हो चुकी थी। इसे बदलकर नयी बंदूक दी गई थी जो मुकाबले में शक्तिशाली और अचूक थी। नयी बंदूक में गोली दागने की आधुनिक प्रणाली प्रिकशन कैप का प्रयोग किया जाता था। परन्तु इस नयी एनफ़ील्ड बंदूक भरने के लिये कारतूस को दांतों से काट कर खोलना पड़ता था और उसमे भरे हुए बारुद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस को डालना पड़ता था। कारतूस का बाहरी आवरण में चर्बी होती थी जो कि उसे पानी की सीलन से

बचाती थी। इस बात को लेकर सिपाहियों में असंतोष उभरने लगा तथा इन कारतूस का उपयोग न करने का वातावरण बनने लगा। सिपाहियों ने अपनी समस्या से अंग्रेज अधिकारियों को अवगत कराया पर अधिकारियों ने इसका समस्या का समाधान निकालने के बजाय उन सैनिकों पर कार्रवाई करने का निर्णय लिया जो इन कारतूसों के प्रति वातावरण बना रहे थे। इसमें मंगल पाण्डेय का नाम सबसे ऊपर पाया गया। उन्होने इन कारतूसों को लेने इंकार कर दिया। इसलिये अधिकारियों ने मंगल पांडेय को दण्ड देकर रास्ते पर लाने का निर्णय लिया। मंगल पाण्डेय को पहले एक बैरक में बंद करके बेंत मारने की सजा दी गई। मंगल पाण्डेय ने मन ही मन कुछ निर्णय किया और कारतूस लेने की सहमति दे दी तब उन्हें पुनः काम पर बहाल करने का निर्णय हुआ। तब 29 मार्च 1857 को बैरकपुर परेड मैदान में परेड का आयोजन हुआ। इसमें वे दो अंग्रेज अधिकारी भी भाग लेने वाले थे जो इन कारतूसों के उपयोग पर जोर दे रहे थे। इनमें लेफ़्टीनेण्ट बाउ भी था। परेड करते हुये जैसे ही बाग सामने आया क्राँतिकारी मंगल पाण्डेय ने बाउ पर गोली चला दी। बाउ घायल होकर गिर पड़ा। जनरल जान ह्यूसन ने जमादार ईश्वरी प्रसाद को मंगल पांडेय को गिरफ़्तार करने का आदेश दिया पर जमादार ने मना कर दिया। सारी पलटन सार झुकाकर खड़ी रही। मंगल पाण्डेय को गिरफ़्तार करने कोई सिपाही आगे न आया। जनरल ने अनेक धमकियाँ दीं और लालच भी दिये तब शेख पलटु नामक एक सिपाही आगे आया। तब मंगल पाण्डेय ने पल्टन से विद्रोह करने का आव्हान किया पर इसके लिये किसी सिपाही का साहस न हुआ। परिस्थिति देखकर मंगल पाण्डेय ने स्वयं अपनी बंदूक से अपना बलिदान करने का विचार बनाया किन्तु वे घायल भर हुये। यहाँ इतिहास अलग–अलग पुस्तकों में अलग–अलग विवरण हैं। कुछ पुस्तकों में उनके घायल होने का कारण शेख पलटू द्वारा चलाई गई गोली थी जबकि कुछ ने स्वयं मंगल पाण्डेय द्वारा आत्म बलिदान करने का प्रयास लिखा है। जो हो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 6 अप्रैल 1857 को कोर्ट मार्शल हुआ। उन्हे मृत्युदंड मिला। इसके लिये 18 अप्रैल 1857 की तिथि निर्धारित की गई। किन्तु इससे दस दिन पहले 8 अप्रैल 1857 को ही उन्हें फाँसी दे दी गई।

सिपाही मंगल पाण्डेय द्वारा बंगाल की बैरकपुर छावनी में जिस क्रांति का उद्घोष किया था वही आगे चलकर पूरे देश में एक विशाल दावानल बनी। क्राँतिकारी मंगल पाण्डेय के बलिदान के एक महीने बाद ही 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में कोतवाल धनसिंह गुर्जर ने क्रांति का उद्घोष किया और दिल्ली को अंग्रेजों से मुक्त कराया। यह विप्लव था जिससे अंग्रेजों को यह संदेश बहुत स्पष्ट मिल गया था कि भारत पर राज्य करना उतना सरल नहीं है जितना वे समझ रहे थे। इसके बाद ही उन्होंने भारत में कानूनों का दबाव बनाया और समाज को बाँटकर राज्य करने का षड्यंत्र तेज किया। पर मंगल पाण्डेय भारतीय इतिहास में अमर हो गये।

भाजपा राष्ट्रवादी राजनीति का संकल्प : धर्मपाल

भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम दूसरे दिन प्रदेश में बूथ स्तर आयोजित किये गए। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने मुरादाबाद, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य अलीगढ, श्री ब्रजेश पाठक लखनऊ महानगर तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने लखनऊ जिला में स्थापना दिवस पर पार्टी पदाधिकारियों, स्थानीय नागरिको तथा कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया। प्रदेश में पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ नेता तथा पार्टी के कार्यकर्ता बूथ पर आयोजित कार्यक्रमों में पहुंचे और हर्षोल्लास के साथ पार्टी का स्थापना दिवस मनाया।

भाजपा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने राजधानी लखनऊ के बक्शी का तालाब के चिनहट ग्रामीण मंडल के बूथ क्रमांक 299 पर आयोजित पार्टी के स्थापना दिवस कार्यक्रम को सम्बोधित किया। श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सिर्फ एक दल नहीं बल्कि एक विचार है। जो राष्ट्र की आराधना, मां भारती की साधना और सबके कल्याण की कामना के साथ काम करती है। भाजपा हर क्षेत्र, हर भाषा, हर संप्रदाय और हर देशवासी को जोड़कर आगे बढ़ रही हैं। भाजपा आज राष्ट्रहित की भी पार्टी है और क्षेत्रीय आकांक्षाओं की भी पार्टी है।

भारतीय जनता पार्टी अपने मूल्यों, सिद्धातों, नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की वजह से आज दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। हमारे पास 18 करोड़ से ज्यादा समर्पित कार्यकर्ता है। देश की आबादी में 13 फीसदी से ज्यादा लोग हमारे सदस्य हैं। देश के 21 राज्यों में हमारी या हमारे गठबंधन की सरकार है। भारतीय जनता पार्टी आज जिस मुकाम पर खड़ी है उसमें असंख्य कार्यकर्ताओं का संघर्ष, हमारे नेताओं का बलिदान, त्याग और समर्पण शामिल है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्रद्धेय गुरु जी से मिलने के बाद डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी व प्रोफेसर बलराज मधोक जी के साथ मिलकर 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। देश आजादी के बाद भी ब्रिटिश औपनिवेशिक मानसिकता पर चल रहा था। ऐसे में पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने कहा कि पूंजीवाद हो या समाजवाद दोनों ही भारतीय भूमि की उपज नहीं हैं। हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाते। दीन दयाल जी ने कहा कि हमें विवाद या संघर्ष नहीं समन्वय का रास्ता चुनना है। जहां व्यक्ति का व्यक्ति से संघर्ष ना हो बल्कि एकात्मता का भाव हो। पंडित दीनदयाल जी के इसी एकात्म मानववाद और अंत्योदय को लेकर भारतीय जनसंघ की यात्रा शुरू हुई और आज भाजपा रूपी विशाल वृक्ष के रूप में हमारे और आप सबके सामने खड़ी है।

श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि हमारे मुद्दे थे समान नागरिक संहिता, गोहत्या पर प्रतिबंध और जम्मू–कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति। एक देश में दो विधान, दो निशान, दो प्रधान के विरोध में डॉ श्याम प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू–कश्मीर कूच करने का फैसला किया। जहां प्रवेश के लिए परमिट की आवश्यकता होती थी। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश की एकता और अखण्डता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

उन्होंने कहा कि 1977 में इमरजेंसी खत्म होने के बाद जनसंघ ने राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के साथ विपक्षी दलों के साथ वैचारिक मतभेदों को भुलाकर इंदिरा गांधी और कांग्रेस पार्टी की तानाशाही को जवाब देने के लिए खुद का जनता पार्टी में विलय कर दिया। मोरारजी देसाई की अगुवाई में जनता पार्टी की केंद्र में सरकार बनी, अटल बिहारी वाजपेयी जी विदेश मंत्री और लालकृष्ण आडवाणी जी सूचना एवं प्रसारण मंत्री बने। इंदिरा गांधी के खिलाफ विपक्षी एकजुटता का ये प्रयोग बहुत ज्यादा दिनों तक सफल नहीं हो सका। गुटबाजी और अंतर्विरोधों की वजह से 1979 में जनता पार्टी की सरकार गिर गयी। कांग्रेस पार्टी के खिलाफ देश को राष्ट्रवादी राजनीति का विकल्प देने के लिए 6 अप्रैल 1980 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। अटल बिहारी वाजपेयी जी इसके पहले अध्यक्ष बने। 6 अप्रैल 1980 को भाजपा के गठन के बाद पार्टी का पहला अधिवेशन दिसंबर 1980 को मुंबई में हुआ। श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि भाजपा अपने कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या से बनी हुई है। भाजपा ज़मीन पर काम करके आगे बढ़ी है। भाजपा गांव में, खेत खलिहानों में गरीबों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर तपकर के आगे बढ़ी है। उन्होंने कहा कि तपेगा जो, गलेगा वो, गलेगा जो ढलेगा वो, ढलेगा जो बनेगा वो के मूलमंत्र पर चलते हुए भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्र सर्वोपरि के भाव के साथ काम कर रहे हैं।

सबको अपने धर्म का अनुसरण करने का अधिकार : शाह

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आज लोकसभा में वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 और मुसलमान वक्फ (निरसन) विधेयक, 2024 पर चर्चा में हिस्सा लिया। चर्चा में भाग लेते हुए श्री अमित शाह ने कहा कि वक्फ एक अरबी शब्द है, जिसका इतिहासहदीसों से जुड़ा हुआ है। आजकल जिस अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है, उसका मतलब है अल्लाह के नाम पर संपत्ति का दान या पवित्र धार्मिक उद्देश्यों के लिए संपत्ति का दान। उन्होंने कहा कि वक्फ कासमकालीन अर्थ इस्लाम के दूसरे खलीफा श्रीओमर के समय में अस्तित्व में आया। आज की भाषा में वक्फ एक प्रकार का Charitable Endowment है, जहां कोई व्यक्ति धार्मिक या सामाजिक भलाई के लिए संपत्तिदान करता है। इसमें दान निजी चीज का ही किया जा सकता है। सरकारी संपत्ति या किसी और की संपत्ति का दान नहीं कर सकते।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि वक्फ बोर्ड में धार्मिक दान से जुड़े कार्यों में किसी गैर–इस्लामिक सदस्य को जगह नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि धार्मिक संस्थाओं के संचालन में गैर–मुस्लिम व्यक्ति रखने का प्रावधान नहीं है और हम ऐसे प्रावधान करना भी नहीं चाहते। श्री शाह ने कहा कि विपक्ष भ्रांति फैला रहा है कि यह विधेयक मुस्लिमों के धार्मिक क्रियाकलापों और उनके द्वारा दान की गई संपत्ति में दखल के लिए लाया जा रहा। उन्होंने कहा कि विपक्ष अलसंख्यक समुदाय को डरा कर अपनी वोट बैंक खड़ी करने की कोशिश कर रहा है।

गृह मंत्री ने कहा कि वक्फ बोर्ड या इसके परिसरों में जिन गैर–मुस्लिम सदस्यों को रखा जाएगा, उनका काम धार्मिक क्रियाकलापों से संबंधित नहीं होगा। वे सिर्फ यह सुनिश्चित करेंगे कि दान से संबंधित मामलों का प्रशासन नियम के अनुरूप हो रहा है या नहीं। उन्होंने कहा कि वक्फ भारत में ट्रस्ट की तरह है। ट्रस्ट में ट्रस्टी और एक मैनेजिंग ट्रस्टी होते हैं। वक्फ में वाकिफ और मुतवली होते हैं, जो इस्लाम के अनुयायी होते हैं। श्री शाह ने कहा कि वक्फ शब्द ही इस्लाम से आया है, इसलिए वक्फ वही कर सकता है जो इस्लाम का अनुयायी हो। उन्होंने कहा कि वक्फ धार्मिक चीज है, लेकिन वक्फ बोर्ड या वक्फ परिसर धार्मिक नहीं हैं। कानून के मुताबिक चैरिटी कमिश्नर किसी भी धर्म का व्यक्ति बन सकता है, क्योंकि उसे ट्रस्ट नहीं चलाना। उसे यह सुनिश्चित करना है कि चैरिटी कानून के हिसाब से बोर्ड का संचालन हो। श्री शाह ने कहा कि यह धर्म का नहीं, प्रशासन का काम है।

श्री अमित शाह ने कहा कि वक्फ बोर्ड का काम वक्फ की संपत्तियां बेच खाने वालों को पकड़ कर बाहर निकालने का होना चाहिए। उसे ऐसे लोगों को पकड़ना चाहिए जिन्होंने वक्फ के नाम पर औने–पौने दाम में संपत्तियों को सौ–सौ साल तक किराए पर दे रखा है। उन्होंने कहा कि वक्फ की आय कम होती जा रही है, जबकि वक्फ के पैसे से अल्पसंख्यक समुदाय का विकास होना चाहिए और इस्लाम धर्म की संस्थाओं को पुख्ता किया जाना चाहिए। इस पैसे की चोरी पर रोक लगाना ही वक्फ बोर्ड और उसके परिसर का काम होगा। उन्होंने कहा कि विपक्ष चाहता है उनके राज में चलने वाली मिलीभगत चलती ही रहे, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि अगर 2013 में वक्फ कानून में संशोधन नहीं किया गया होता, तो इस विधेयक को लाने की नौबत ही नहीं आती। लेकिन 2014 में चुनाव से पहले 2013 में रातों–रात तुष्टीकरण की खातिर वक्फ कानून को Extreme बना दिया गया, जिसके कारण दिल्ली में लुटियन्स ज़ोन की 123 वीवीआईपी संपत्तिवक्फ को दे दी गई। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने उत्तरी रेलवे की भूमि वक्फ के नाम कर दी। वहीं, हिमाचल प्रदेश में वक्फ की संपत्ति बता कर उस जमीन पर अवैध मस्जिद बनाने का काम किया गया। तमिलनाडु के 1500 साल पुराने तिरुचेंदूर मंदिर की 400 एकड़ भूमि को वक्फ की संपत्ति घोषित कर दिया गया। श्री शाह ने कहा कि कर्नाटक कीएक समिति की रिपोर्ट के अनुसार, 29,000 एकड़ वक्फ भूमि व्यावसायिक

उपयोग के लिए किराए पर दे दी गई। वर्ष 2001 से 2012 के बीच 2 लाख करोड़ रुपए मूल्य की वक्फ संपत्ति निजी संस्थानों को 100 साल की लीज पर सौंप दी गई। उन्होंने कहा कि बेंगलुरु में उच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ा, जिसके बाड़ 602 एकड़ भूमि के अधिग्रहण को रोका गया। विजयपुर, कर्नाटक के होनवाड़ गांव की 1500 एकड़ भूमि को विवादित बनाकर 500 करोड़ रुपए मूल्य की इस जमीन को फाइव–स्टार होटल को मात्र 12,000 रुपए प्रति माह के किराए पर दे दिया गया।

श्री अमित शाह ने कहा कि यह सारा पैसा गरीब मुसलमानों के कल्याण के लिए है, न कि धनकुबेरों की लूट के लिए। कर्नाटक में दत्तापीठ मंदिर पर दावा किया गया। तालीपरंबा में 75 साल पुराने एक दावे के आधार पर 600 एकड़ भूमि पर कब्जे की कोशिश की गई। ईसाई समुदाय की संपत्तियों पर भी कब्जा किया गया। उन्होंने कहा कि देश के कई चर्चों ने वक्फ बिल का विरोध किया है, क्योंकि वे इसे मुस्लिम समुदाय की सहानुभूति जीतने का जरिया मानते है। लेकिन चार साल में मुस्लिम भाइयों को भी पता चल जाएगा कि यह विधेयक तो उनके फायदे का है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि तेलंगाना में 66 हजार करोड़ रुपए की 1700 एकड़ जमीन पर दावा कर दिया, वहीं असम में मोरीगांव जिले की 134 एकड़ भूमि पर दावा किया गया। गुरुद्वारे से संबंधित हरियाणा की चौदह मरला भूमि को वक्फ को सौंप दिया और प्रयागराज में चंद्रशेखर आजाद पार्क को भी वक्फ की संपत्ति घोषित कर दिया। महाराष्ट्र के वडांगे गांव में महादेव के मंदिर पर दावा किया और बीड में कंकलेश्वर की 12 एकड़ जमीन वक्फ बोर्ड ने जबरन ले ली।

श्री अमित शाह ने कहा कि मुस्लिम भाइयों के धार्मिक क्रियाकलाप और उनके बनाए हुए दान से जुड़े ट्रस्ट यानि वक्फ में सरकार कोई दखल नहीं करना चाहती। मुतवली, वाकिफ, वक्फ सब उनके ही होंगे, परन्तु यह जरूर देखा जाएगा कि वक्फ की संपत्ति का रखरखाव ठीक से हो रहा है या नहीं। वक्फ का संचालन कानून के हिसाब से हो रहा है या निजी उपयोग के हिसाब से हो रहा है। उन्होंने सवाल किया कि सैकड़ों साल पहले किसी बादशाह की दान की गई संपत्ति को 12 हजार रुपए के मासिक किराये पर पांच सितारा होटल बनाने के लिए देना कहाँ तक उचित है। वह पैसा गरीब मुसलमानों, तलाकशुदा महिलाओं, अनाथ बच्चों, बेरोजगार मुसलमानों के भलाई और उन्हें हुनरमंद बनाने के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्फ के पास लाखों करोड़ों रुपए की भूमि है, लेकिन आय सिर्फ 126 करोड़ रुपए है।

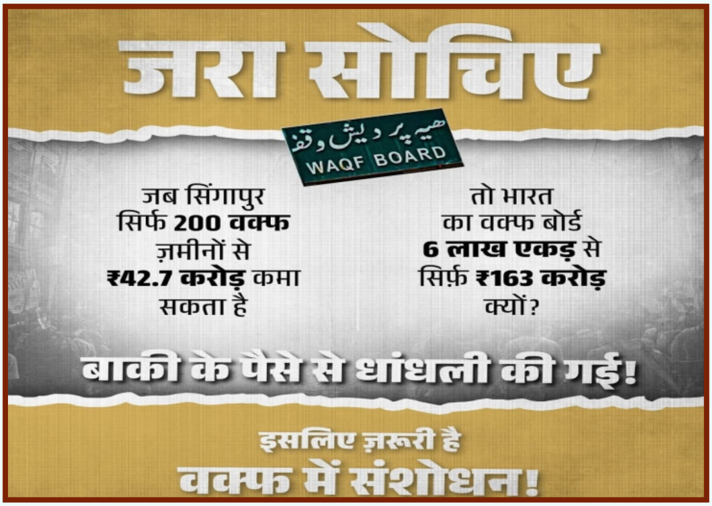

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि जब 2013 का संशोधन विधेयक पेश किया था, उस समय सरकार में रहे वरिष्ठ नेताओं ने वक्फ की संपत्ति की लूट–खसोट रोकने के लिए कड़े कानून बनाने और दोषियों को सलाखों के पीछे भेजने की वकालत की थी। श्री शाह ने कहा कि मौजूदा विधेयक से पारदर्शी ऑडिट हो सकेगा। उन्होंने कहा कि विपक्ष ने अपने संशोधन में लिखा था कि वक्फ बोर्ड के ऑडर को कोर्ट में चैलेंज नहीं कर सकते, लेकिन सच यह है कि इसे अदालत में चुनौती देने का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि यह विधेयक retrospective effect से लागू नहीं होगा लेकिन विपक्ष द्वारा मुस्लिमों को डराया जा रहा है।

श्री अमित शाह ने वक्फ से जुड़े विधेयक में जिला कलेक्टर की भूमिका पर कहा कि देश में जब किसी मंदिर के लिए जमीन खरीदनी होती है तो कलेक्टर ही यह तय करता है कि जमीन का मालिकाना हक किसके पास है। उन्होंने कहा कि फिर वक्फ की भूमि की जांच कलेक्टर द्वारा किए जाने पर आपत्ति क्यों है? गृह मंत्री ने कहा कि वक्फ की भूमि सरकारी है या नहीं, इसे कलेक्टर ही सत्यापित कर सकता है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार का स्पष्ट सिद्धांत है कि वोट बैंक के लिए हम कोई कानून नहीं लाएंगे क्योंकि कानून न्याय और लोगों के कल्याण के लिए होता है। इसी सदन में मोदी सरकार महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का कानून लाई और पिछड़ों को संवैधानिक अधिकार दिया गया। उन्होंने कहा कि सबको अपने धर्म का अनुसरण करने का अधिकार है, लेकिन लोभ, लालच और भय से धर्म परिवर्तन नहीं कराया जा

सकता।

श्री अमित शाह ने कहा कि 2013 में लाए गए संशोधन विधेयक पर दोनों सदनों में कुल मिलाकर साढ़े 5 घंटे चर्चा हुई जबकि इस बिल पर दोनों सदनों को मिलाकर 16 घंटे चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा कि हमने संयुक्त समिति बनाई, 38 बैठकें हुईं, 113 घंटे चर्चा हुई और 284 हितधारक बनाए गए। इन सबसे देशभर से लगभग एक करोड़ ऑनलाइन सुझाव आए जिनकी मीमांसा कर यह कानून बनाया गया और इसे ऐसे खारिज नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि सदन में हर सदस्य बोलने के लिए स्वतंत्र है यहाँ किसी एक परिवार की नहीं चलती है। सांसद जनता के नुमाइंदे हैं, किसी की कृपा से नहीं आए हैं और वे जनता की आवाज़ को रखेंगे।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि यह देश की संसद द्वारा बनाया गया कानून है जिसे सबको स्वीकारना पड़ेगा। यह भारत सरकार का कानून है जो सब पर बाध्य है और सभी को इसे स्वीकारना होगा। उन्होंने कहा कि 1913 से 2013 तक वक्फ बोर्ड की कुल भूमि 18 लाख एकड़ थी, जिसमें 2013 से 2025 के बीच 21 लाख एकड़ भूमि और बढ़ गई। इस 39 लाख एकड़ भूमि में 21 लाख एकड़ भूमि 2013 के बाद की है। श्री शाह ने कहा कि लीज़ पर दी गई संपत्तियां 20 हज़ार थीं, लेकिन रिकॉर्ड के हिसाब से 2025 में ये संपत्तियां शून्य हो गईं। उन्होंने कहा कि ये संपत्तियां बेच दी गईं। गृह मंत्री ने कहा कि कैथौलिक और चर्च संगठनों ने इस कानून को अपना समर्थन दिया है और 2013 के संशोधन को अन्यायी बताया है।

श्री अमित शाह ने कहा कि यह विधेयक ज़मीन की सुरक्षा प्रदान करेगा, किसी की ज़मीन घोषण मात्र से वक़्फ़ नहीं बनेगी और उसे सुरक्षा मिलेगी। उन्होंने कहा कि पुरातत्व विभाग और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ज़मीन को सुरक्षा देंगे और शेड्यूल 5 और 6 के अनुसार आदिवासियों की ज़मीन सुरक्षित हो जाएगी। इसके साथ ही आम नागरिक की निजी संपत्ति भी सुरक्षित हो जाएगी। श्री शाह ने कहा कि दान तो सिर्फ़ अपनी संपत्ति का ही किया जा सकता है इसीलिए स्वामित्व के बिना वक़्फ़ निजी संपत्ति नहीं ले पाएगा। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता लाने के लिए वक़्फ़ अधिनियम में सूचना देने की प्रक्रिया को शामिल किया गया है।

गृह मंत्री ने कहा कि वक़्फ़ की संपत्ति घोषित करने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया है और अब इसे कलेक्टर से सत्यापित करवाना होगा। इसके साथ ही नए वक़्फ़ का पारदर्शी तरीक़े से पंजीकरण भी करवाना होगा। उन्होंने कहा कि अब मुस्लिम भी वक़्फ़ ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत अपना ट्रस्ट रजिस्टर करवा सकते हैं। श्री शाह ने कहा कि इसके लिए वक़्फ़ क़ानून ज़रूरी नहीं है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने ज़ोर देकर कहा कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों में भय पैदा करना का फ़ैशन बन गया है। उन्होंने कहा कि राम जन्मभूमि मंदिर, ट्रिपल तलाक़ और नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA) के समय भी मुस्लिम समुदाय के लोगों में भय पैदा करने की कोशिश की गई, लेकिन मुस्लिम समुदाय भी जानता है कि भय की कोई बात नहीं थी। गृह मंत्री ने कहा विपक्ष कहता था कि CAA से मुसलमानों की नागरिकता चली जाएगी लेकिन दो साल हो गए किसी की नागरिकता नहीं गई। उन्होंने विपक्ष से कहा कि अगर CAA से किसी की नागरिकता गई है तो वह उसकी जानकारी सदन के पटल पर रखे। श्री शाह ने कहा कि धारा 370 हटाने पर भी मुसलमानों को डराने का प्रयास किया गया लेकिन आज वहाँ एक निर्वाचित सरकार है, आतंकवाद समाप्त हो गया, विकास शुरू हो गया और पर्यटन बढ़ गया।

श्री अमित शाह ने कहा विपक्षी पार्टी और उसके सहयोगी दलों ने मुसलमान भाइयों को डरा–डरा कर अपनी वोटबैंक खड़ी करने का काम किया है। गृह मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार का यह संकल्प है कि इस देश के किसी भी नागरिक को चाहे वह किसी भी धर्म को हो कोई आँच नहीं आएगी।

गाँव-गली चलो अभियान

भारतीय जनता पार्टी स्थापना दिवस अभियान के तहत हर गांव, गली व वार्ड में हर घर तक पहुंचकर मोदी सरकार व योगी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को पहुंचा रही है। गांव चलो, गली चलो, वार्ड चलो अभियान के अन्तर्गत शनिवार 12 अप्रैल को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी बाराबंकी सदर विधानसभा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती रेखा वर्मा सीतापुर जिले की महौली विधानसभा, पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अरूण सिंह बदायूं जिले की बिल्सी व बरेली जिले की बिथरी चैनपुर विधानसभा, उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक अयोध्या जिला की रूदौली विधानसभा, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह सुलतानपुर जिले की इसौली विधानसभा तथा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा. महेन्द्रनाथ पाण्डेय चन्दौली के सैयदराजा विधानसभा में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीणों के साथ संपर्क व संवाद करेगे। इसके साथ ही 10 अप्रैल से 13 अप्रैल तक चलने वाले अभियान में प्रदेश सरकार के मंत्री, पार्टी के पदाधिकारी, सांसद, विधायक, महापौर, आयोग–बोर्ड–निगम के अध्यक्ष व सदस्य, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका व नगर पंचायत अध्यक्ष सहित सभी जनप्रतिनिधि भाजपा के वरिष्ठ नेता तथा कार्यकर्ता हर दहलीज पर पहुंचकर दस्तक दे रहें है। पार्टी की विचारधारा के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार का लेखा–जोखा लेकर भाजपा हर घर तक पहुंच रही है।

प्रदेश महामंत्री एवं अभियान के प्रदेश संयोजक श्री संजय राय ने बताया कि 12 अप्रैल शनिवार को केन्द्रीय मंत्री श्री बीएल वर्मा बदायूं की बिल्सी विधानसभा, श्री कमलेश पासवान देवरिया की बरहज विधानसभा, पूर्व राष्ट्रीय मंत्री श्री हरीश द्विवेदी बस्ती सदर विधानसभा, प्रदेश सरकार के मंत्री श्री ए.के. शर्मा मऊ सदर विधानसभा, श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी मथुरा जिला की छाता विधानसभा, श्री दयाशंकर सिंह बलिया विधानसभा, श्री नरेन्द्र कश्यप गाजियाबाद जिला की लोनी विधानसभा, श्रीमती गुलाब देवी बदायूं जिले की चन्दौसी विधानसभा, श्री बलदेव सिंह ओलख पीलीभीत की बरखेड़ा विधानसभा, श्री जसवंत सैनी सहारनपुर देहात विधानसभा, श्री संदीप सिंह अलीगढ़ जिला की अतरौली विधानसभा, श्री जयवीर सिंह मैनपुरी विधानसभा, श्री अरूण सक्सेना बरेली शहर विधानसभा, श्री मयंकेश्वर शरण सिंह रायबरेली की तिलोई विधानसभा, श्री सतीश चन्द्र शर्मा बाराबंकी जिला की दरियाबाद विधानसभा, श्री राकेश सचान कानपुर देहात की भोगनीपुर विधानसभा, श्रीमती प्रतिभा शुक्ला कानपुर देहात की अकबरपुर रनियां विधानसभा, श्री अजीत पाल कानुपर देहात की सिकन्दरा विधानसभा में गांव चलो, गली चलो, वार्ड चलो अभियान के तहत घर–घर संपर्क करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार एवं मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य की भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी नीतियां, ऐतिहासिक निर्णय लोकदरबार में लेकर पहुंचेगे।

भाजपा सरकार जनता के द्वार

भारतीय जनता पार्टी स्थापना दिवस अभियान के अन्तर्गत 10 अप्रैल से गांव चलो, गली चलो, वार्ड चलो अभियान जन–जन तक पहुंच रहा है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी लखनऊ, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य कानपुर, श्री ब्रजेश पाठक लखनऊ महानगर तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने बाराबंकी में सम्पर्क कर केन्द्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं के साथ जनता से संवाद किया। प्रदेश सरकार के मंत्री, पार्टी के पदाधिकारी, सांसद, विधायक, महापौर, आयोग–बोर्ड–निगम के अध्यक्ष व सदस्य, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिका व नगर पंचायत अध्यक्ष सहित सभी जनप्रतिनिधि भाजपा के वरिष्ठ नेता तथा कार्यकर्ता हर दहलीज पर पहुंचकर दस्तक दे रहें है। पार्टी की विचारधारा के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार का लेखा–जोखा लेकर भाजपा हर घर तक पहुंच रही है।

प्रदेश महामंत्री एवं अभियान के प्रदेश संयोजक श्री संजय राय ने बताया कि शुक्रवार 11 अप्रैल 2025 को उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक वाराणसी जिला की पिण्ड्रा विधानसभा, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह वाराणसी जिला की रोहनियां विधानसभा, केन्द्रीय मंत्री श्री पंकज चौधरी महराजगंज सदर विधानसभा, श्री एसपी सिंह बघेल आगरा महानगर की दक्षिण विधानसभा, श्री कमलेश पासवान देवरिया जिला की रूद्रपुर विधानसभा, प्रदेश सरकार में मंत्री श्री ब्रजेश सिंह गौतमबुद्धनगर जिला की दादरी विधानसभा, श्री नरेन्द्र कश्यप शाहजहांपुर महानगर सदर विधानसभा, श्री बलदेव सिंह ओलख रामपुर जिला की बिलासपुर विधानसभा, श्री कपिल देव अग्रवाल मुजफ्फरनगर सदर विधानसभा, श्रीमती बेबी रानी मौर्य आगरा जिला की ग्रामीण विधानसभा, श्री योगेन्द्र उपाध्याय आगरा दक्षिण विधानसभा, श्री संजय सिंह गंगवार पीलीभीत विधानसभा, श्री संजीव गोड़ सोनभद्र जिला की ओबरा विधानसभा, श्री दानिश आजाद अंसारी बलिया जिला की फेफना विधानसभा, श्री नितिन अग्रवाल हरदोई विधानसभा, श्रीमती रजनी तिवारी हरदोई जिला की शाहाबाद विधानसभा, श्री राकेश राठौर गुरू सीतापुर विधानसभा, श्री राकेश सचान कानपुर देहात की भोगनीपुर विधानसभा, श्री अजीत पाल कानपुर देहात की सिकन्दरा विधानसभा, श्री रामकेश निशाद बांदा जिला की तिन्दवारी विधानसभा में अभियान के तहत घर–घर सम्पर्क करेंगे।

श्री राय ने बताया कि प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विजय बहादुर पाठक लखनऊ महानगर, श्रीमती कान्ता कर्दम मेरठ, श्री संतोश सिंह लखनऊ महानगर, श्रीमती नीलम सोनकर प्रयागराज, श्रीमती कमलावती सिंह इटावा, श्री बृज बहादुर रायबरेली, श्रीमती सुनिता दयाल गाजियाबाद, श्री पद्मसेन चौधरी श्रावस्ती, श्री देवेश कुमार हमीरपुर, प्रदेश महामंत्री श्री गोविन्द नारायण शुक्ला लखनऊ महानगर, श्रीमती प्रियंका सिंह रावत बाराबंकी, प्रदेश मंत्री श्रीमती मीना चौबे वाराणसी, श्रीमती अंजुला माहौर हाथरस, डॉ. शकुन्तला चौहान मऊ, श्रीमती अनामिका चौधरी प्रयागराज, श्री अमित वाल्मीकि बुलन्दशहर, श्री बसन्त त्यागी बुलन्दशहर, श्री सुरेश पासी अमेठी, श्री अभिजात मिश्रा लखनऊ महानगर एवं प्रदेश सह कोशाध्यक्ष श्री संजीव अग्रवाल बरेली जिले में अभियान के तहत घर–घर सम्पर्क करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार तथा माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी नीतियां जनता के बीच पहुंचाने का काम करेंगे।

"'काशी हमार हौ, हम काशी क''

काशी के हमरे परिवार के लोगन के हमार प्रणाम। आप सब लोग यहां हमें आपन आशीर्वाद देला। हम ए प्रेम क कर्जदार हई। काशी हमार हौ, हम काशी क हई।

हनुमान जन्मोत्सव का पावन दिन है और आज मुझे संकट मोचन महाराज की काशी में आपके दर्शन का सौभाग्य मिला है। हनुमान जन्मोत्सव से पहले, काशी की जनता आज विकास का उत्सव मनाने यहां इकट्ठी हुई है। पिछले 10 वर्षों में बनारस के विकास ने एक नई गति पकड़ी है। काशी ने आधुनिक समय को साधा है, विरासत को संजोया है और उज्ज्वल बनाने की दिशा में मजबूत कदम भी रखे हैं। आज काशी, सिर्फ पुरातन नहीं, प्रगतिशील भी है। काशी अब पूर्वांचल के आर्थिक नक्शे के केंद्र में है। जौने काशी के स्वयं महादेव चलाव लन। आज उहे काशी पूर्वांचल के विकास के रथ के खींचत हौ!

कुछ देर पहले काशी और पूर्वांचल के अनेक हिस्सों से जुड़ी ढेर सारी परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है। कनेक्टिविटी को मजबूती देने वाले अनेक इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, गांव–गांव, घर–घर तक नल से जल पहुंचाने का अभियान, शिक्षा, स्वास्थ्य और खेल सुविधाओं का विस्तार और हर क्षेत्र, हर परिवार, हर युवा को बेहतर सुविधाएं देने का संकल्प ये सारी बातें, ये सारी योजनाएं, पूर्वांचल को विकसित पूर्वांचल बनाने की दिशा में मील का पत्थर बनने वाली हैं। काशी के हर निवासी को इन योजनाओं से खूब लाभ मिलेगा। इन सभी विकास कार्यों के लिए, बनारस के लोगों को, पूर्वांचल के लोगों को मैं ढेर सारी बधाई देता हूं।

आज सामाजिक चेतना के प्रतीक महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती भी है। महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जी ने जीवन भर, नारी शक्ति के हित, उनके आत्मविश्वास और समाज कल्याण के लिए काम किया। आज हम उनके विचारों को, उनके संकल्पों को नारी सशक्तिकरण के उनके आंदोलन को आगे बढ़ा रहे हैं, नई ऊर्जा दे रहे हैं।

आज मैं एक बात और भी कहना चाहूंगा, महात्मा फुले जी जैसे त्यागी, तपस्वी, महापुरुषों से प्रेरणा से ही देश सेवा का हमारा मंत्र रहा है, सबका साथ, सबका विकास। हम देश के लिए उस विचार को लेकर के चलते हैं, जिसका समर्पित भाव है, सबका साथ, सबका विकास। जो लोग सिर्फ और सिर्फ सत्ता हथियाने के लिए, सत्ता पाने के लिए, दिन रात खेल खेलते रहते हैं, उनका सिद्धांत है, परिवार का साथ, परिवार का विकास। आज मैं सबका साथ, सबका विकास के इस मंत्र को साकार करने की दिशा में पूर्वांचल के पशुपालक परिवारों को, विशेष रूप से हमारी मेहनतकश बहनों को विशेष बधाई देता हूं। इन बहनों ने बता दिया है, अगर भरोसा किया जाए, तो वो भरोसा नया इतिहास रच देता है। ये बहनें अब पूरे पूर्वांचल के लिए नई मिसाल बन चुकी हैं। थोड़ी देर पहले, उत्तर प्रदेश के बनास डेयरी प्लांट से जुड़े सभी पशुपालक साथियों को बोनस वितरित किया गया है। बनारस और बोनस, ये कोई उपहार नहीं है, ये आपकी तपस्या का पुरस्कार है। 100 करोड़ रुपये से ज़्यादा का ये बोनस, आपके पसीने का, आपके परिश्रम का तोहफा है। बनारस डेयरी ने काशी में हजारों परिवारों की तस्वीर और तक़दीर दोनों बदल दी है। इस डेयरी ने आपकी मेहनत को इनाम में बदला और सपनों को नई उड़ान दी और खुशी की बात ये, कि इन प्रयासों से, पूर्वांचल की अनेकों बहनें अब लखपति दीदी बन गई हैं। जहाँ पहले गुज़ारे की चिंता थी, वहाँ अब कदम खुशहाली की तरफ बढ़ रहे हैं। और ये तरक्की बनारस, यूपी के साथ ही पूरे देश में दिखाई दे रही है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। 10 साल में दूध के उत्पादन में करीब 65 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, डबल से भी ज्यादा। ये सफलता आप जैसे देश के करोड़ों किसानों की है, मेरे पशुपालक भाइयों और बहनों की है और ये सफलता एक दिन में नहीं मिली है, बीते 10 सालों से, हम देश के पूरे डेयरी सेक्टर को मिशन मोड में आगे बढ़ा रहे हैं।

हमने पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा से जोड़ा है, उनके लिए लोन की सीमा बढ़ाई है, सब्सिडी की व्यवस्था की है और सबसे बड़ा महत्वपूर्ण एक काम, जीव दया का काम भी है। खुरपका–मुंहपका, थ्वव ंदक डवनजी क्पेमेंम से पशुधन को बचाने के लिए मुफ्त वैक्सीन प्रोग्राम चलाया जा रहा है। कोविड की मुफ्त वैक्सीन की तो सबको चर्चा करनी याद आती है, लेकिन ये सरकार ऐसी है, जिसके सबका साथ, सबका विकास में मेरे पशुओं को भी मुफ्त में टीकाकरण हो रहा है।

दूध का संगठित कलेक्शन हो इसके लिए देश की 20 हजार से ज्यादा सहकारी समितियों को फिर से खड़ा किया गया

है। इसमें लाखों नए सदस्य जोड़े गए हैं। प्रयास ये है कि डेयरी सेक्टर से जुड़े लोगों को एक साथ जोड़कर आगे बढ़ाया जा सके। देश में गाय की देसी नस्लें विकसित हों, उनकी क्वालिटी अच्छी हो। गायों की ब्रीडिंग का काम साइंटिफिक अप्रोच से हो। इसके लिए राष्ट्रीय गोकुल मिशन चल रहा है। इन सारे कामों का मूल यही है कि देश में जो पशुपालक भाई बहन हैं, वो विकास के नए रास्ते से जुड़ें। उन्हें अच्छे बाजार से, अच्छी संभावनाओं से जुड़ने का अवसर मिले। और आज बनास डेरी का काशी संकुल, पूरे पूर्वांचल में इसी प्रोजेक्ट को, इसी सोच को आगे बढ़ा रहा है। बनास डेयरी ने यहां गिर गायों का भी वितरण किया है और मुझे बताया गया है कि उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। बनास डेयरी ने यहां बनारस में पशुओं के चारे की व्यवस्था भी शुरू कर दी है। पूर्वांचल के करीब–करीब एक लाख किसानों से आज ये डेयरी दूध कलेक्ट कर रही है, किसानों को सशक्त कर रही है।

अभी कुछ देर पहले मुझे यहां कई बुजुर्ग साथियों को आयुष्मान वय वंदना कार्ड सौंपने का अवसर मिला है। मैंने उन साथियों के चेहरे पर जो संतोष का भाव देखा, मेरे लिए आपको सेवक के रूप में स्नेह स्वरूप अपने कर्तव्य को निभाया है और कुछ लौटाने का नम्र प्रयास किया है। मेरी गारंटी थी, बुजुर्गों का इलाज मुफ्त होगा, इसी का परिणाम है, आयुष्मान वय वंदना योजना! ये योजना, बुजुर्गों के इलाज के साथ ही उनके सम्मान के लिए है। अब हर परिवार के 70 वर्ष से ऊपर के बुजुर्ग, चाहे उनकी आय कुछ भी हो, मुफ्त इलाज के हकदार हैं। वाराणसी में सबसे ज़्यादा, करीब 50 हज़ार वय वंदना कार्ड यहां के बुजुर्गों तक पहुंच गए हैं। ये कोई आंकड़ा नहीं, ये सेवा का, एक सेवक का नम्र प्रयास है। अब इलाज के लिए जमीन बेचने की जरूरत नहीं! अब इलाज के लिए कर्ज लेने की मजबूरी नहीं! अब इलाज के लिए दर–दर भटकने की बेबसी नहीं! अपने इलाज के पइसा क चिंता मत करा, आयुष्मान कार्ड से आपके इलाज के पइसा अब सरकार देई!

आज काशी होकर जो भी जाता है, वो यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर की, यहां की सुविधाओं की बहुत प्रशंसा करता है। आज हर दिन लाखों लोग बनारस आते हैं। बाबा विश्वनाथ का दर्शन करते हैं, मां गंगा में स्नान करते हैं। हर यात्री कहता है, बनारस, बहुत बदल गया है। कल्पना कीजिए, अगर काशी

वो इस योजना की सबसे बड़ी सफलता है। इलाज को लेकर घर के बुजुर्गों की जो चिंता रहती है, वो हम सब जानते हैं। 10–11 साल पहले इस क्षेत्र में, पूरे पूर्वांचल में, इलाज को लेकर जो परेशानियां थीं, वो भी हम सब जानते हैं। आज स्थितियां बिल्कुल अलग हैं, मेरी काशी अब आरोग्य की राजधानी भी बन रही है। दिल्ली–मुंबई के बड़े–बड़े जो अस्पताल, ये अस्पताल अब आज आपके घर के पास आ गए हैं। यही तो विकास है, जहाँ सुविधाएं लोगों के पास आती हैं। बीते 10 वर्षों में हमने सिर्फ अस्पतालों की गिनती ही नहीं बढ़ाई है, हमने मरीज की गरिमा भी बढ़ाई है। आयुष्मान भारत योजना मेरे गरीब भाई–बहनों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। ये योजना सिर्फ इलाज नहीं देती, ये इलाज के साथ–साथ विश्वास देती है। उत्तर प्रदेश के लाखों और वाराणसी के हजारों लोग इसका लाभ उठा चुके हैं। हर इलाज, हर ऑपरेशन, हर राहत, जीवन की एक नई शुरुआत बन गई है। आयुष्मान योजना से यूपी में ही लाखों परिवारों के करोड़ों रुपये बचे हैं, क्योंकि सरकार ने कहा, अब आपके इलाज की जिम्मेदारी हमारी है।

जब आपने हमें तीसरी बार आशीर्वाद दिया, तो हमने भी की सड़कें, यहां की रेल और एयरपोर्ट की स्थिति 10 साल पहले जैसी ही रहती, तो काशी की हालत कितनी खराब हो गई होती। पहले तो छोटे–छोटे त्योहारों के दौरान भी जाम लग जाता था। जैसे किसी को चुनार से आना हो और शिवपुर जाना हो। पहले उसको पूरा बनारस घूम कर, जाम में फंसकर, धूल–धूप में तपकर जाना पड़ता था। अब फुलवरिया क फ्लाईओवर बन गइल हो। अब रास्ता भी छोटा, समय भी बचत हो, जीवन भी राहत में हो! ऐसे ही जौनपुर और गाजीपुर के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को आने–जाने में और बलिया, मऊ, गाजीपुर जिलों के लोगों को एयरपोर्ट जाने के लिए वाराणसी शहर के भीतर से जाना होता था। घंटों लोग जाम में फंसे रहते थे। अब रिंग रोड से कुछ ही मिनट में, लोग इस पार से उस पार पहुंच जाते हैं।

केहू के गाजीपुर जाए के हौ त पहिले कई घंटा लगत रहल। अब गाजीपुर, जौनपुर, मिर्जापुर, आजमगढ़ हर शहर में जाने का रास्ता, पहुंचने का रास्ता चौड़ा हो गया है। जहां पहले जाम था, आज वहाँ विकास की रफ्तार दौड़ रही है! बीते दशक में वाराणसी और आस–पास के क्षेत्रों की कनेक्टिविटी, उस पर करीब 45 हज़ार करोड़ रुपए खर्च

किए गए हैं। ये पैसा सिर्फ कंक्रीट में नहीं गया, ये विश्वास में बदला है। इस निवेश का लाभ आज पूरी काशी और आसपास के जिलों को मिल रहा है।

काशी के इंफ्रास्ट्रक्चर पर हो रहे इस निवेश को आज भी विस्तार दिया गया है। हजारों करोड़ के प्रोजेक्टस का आज शिलान्यास किया गया है। हमारा जो लाल बहादुर शास्त्री एयरपोर्ट है, उसके विस्तारीकरण का काम तेजी से चल रहा है। जब एयरपोर्ट बड़ा हो रहा है, तो उसको जोड़ने वाली सुविधाओं का विस्तार भी ज़रूरी था। इसलिए अब एयरपोर्ट के पास 6 लेन की अंडरग्राउंड टनल बनने जा रही है। आज भदोही, गाजीपुर और जौनपुर के रास्तों से जुड़े प्रोजेक्ट्स पर भी काम शुरु हुआ है। भिखारीपुर और मंडुवाडीह पर फ्लाईओवर की मांग लंबे समय से हो रही थी। हमके खुशी हौ कि इहो मांग पूरा होए जात हौ। बनारस शहर और सारनाथ को जोड़ने के लिए नया पुल भी बनने जा रहा है। इससे एयरपोर्ट और अन्य जनपदों से सारनाथ जाने के लिए शहर के अंदर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

अगले कुछ महीनों में, जब ये सारे काम पूरे हो जाएंगे, जो बनारस में आवाजाही और भी आसान होगी। रफ्तार भी बढ़ेगी और कारोबार भी बढ़ेगा। इसके साथ–साथ, कमाई–दवाई के लिए बनारस आने वालों को भी बहुत सुविधा होगी। और अब तो काशी में सिटी रोपवे का ट्रायल भी शुरू हो गया है, बनारस अब दुनिया के चुनिंदा ऐसे शहरों में होगा, जहां ऐसी सुविधा होगी।

वाराणसी में विकास का, इंफ्रास्ट्रक्चर का कोई भी काम होता है, तो इसका लाभ पूरे पूर्वांचल के नौजवानों को होता है। हमारी सरकार का बहुत जोर इस पर भी है कि काशी के युवाओं को स्पोर्ट्स में आगे बढ़ने के लगातार मौके मिलें। और अब तो 2036 में, ओलंपिक भारत में हो, इसके लिए हम लगे हुए हैं। लेकिन ओलंपिक में मेडल चमकाने के लिए मेरे काशी के नौजवानों आपको अभी से लगना पड़ेगा। और इसलिए आज, बनारस में नए स्टेडियम बन रहे हैं, युवा साथियों के लिए अच्छी फैसिलिटी बन रही है। नया स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स खुल गया है। वाराणसी के सैकड़ों खिलाड़ी उसमें ट्रेनिंग ले रहे हैं। सांसद खेल प्रतियोगिता के भी प्रतिभागियों को इस खेल के मैदान में अपना दम दिखाने का अवसर मिला है। भारत आज विकास और विरासत, दोनों एक साथ लेकर चल रहा है। इसका सबसे बढ़िया मॉडल, हमारी काशी बन रही है। यहां गंगा जी का प्रवाह है और भारत की चेतना का भी प्रवाह है। भारत की आत्मा, उसकी विविधता में बसती है और काशी उसकी सबसे सुंदर तस्वीर है। काशी के हर मोहल्ले में एक अलग संस्कृति, हर गली में भारत का एक अलग रंग दिखता है। मुझे खुशी है कि काशी–तमिल संगमम् जैसे आयोजन से, एकता के ये सूत्र निरंतर मजबूत हो रहे हैं। अब तो यहां एकता मॉल भी बनने जा रहा है। इस एकता मॉल में भारत की विविधता के दर्शन होंगे। भारत के अलग–अलग जिलों के उत्पाद, यहां एक ही छत के नीचे मिलेंगे। बीते वर्षों में, यूपी ने अपना आर्थिक नक्शा भी बदला है, नजरिया भी बदला है। यूपी, अब सिर्फ संभावनाओं की धरती नहीं रहा, अब ये सामर्थ्य और सिद्धियों की संकल्प भूमि बन रहा है! अब जैसे आजकल 'मेड इन इंडिया' की गूंज हर तरफ है। भारत में बनी चीजें, अब ग्लोबल ब्रांड बन रही हैं। आज यहां कई उत्पादों को GI टैग दिया गया है। GI टैग, ये सिर्फ एक टैग नहीं है, ये किसी जमीन की पहचान का प्रमाण पत्र है। ये बताता है कि ये चीज़, इसी मिट्टी की पैदाइश है। जहां GI टैग पहुंचता है, वहां से बाजारों में बुलंदियों का रास्ता खुलता है। आज यूपी पूरे देश में GI टैगिंग में नंबर

वन है! यानी हमारी कला, हमारी चीजें, हमारे हुनर की अब तेजी से अंतरराष्ट्रीय पहचान बन रही है। अब तक वाराणसी और उसके आसपास के जिलों में 30 से ज्यादा उत्पादों को GI टैग मिला है। वाराणसी का तबला, शहनाई, दीवार पर बनने वाली पेंटिंग, ठंडाई, लाल भरवां मिर्च, लाल पेड़ा, तिरंगा बर्फी, हर चीज़ को मिला है पहचान का नया पासपोर्ट, ळप् टैग। आज ही, जौनपुर की इमरती, मथुरा की सांझी कला, बुंदेलखंड का कठिया गेहूँ, पीलीभीत की बांसुरी, प्रयागराज की मूंज कला, बरेली की ज़रदोज़ी, चित्रकूट की काष्ठ कला, लखीमपुर खीरी की थारू ज़रदोज़ी, ऐसे अनेक शहरों के उत्पादों को GI टैग वितरित किए गए हैं। यानी यूपी की मिट्टी में जो खुशबू है, अब वो सिर्फ हवा में नहीं, सरहदों के पार भी जाएगी।

जो काशी को सहेजता है, वह भारत की आत्मा को सहेजता है। हमें काशी को निरंतर सशक्त करते रहना है। हमें काशी को, सुंदर और स्वप्निल बनाए रखना है। काशी की पुरातन आत्मा को, आधुनिक काया से जोड़ते रहना है। इसी संकल्प के साथ, मेरे साथ एक बार फिर, हाथ उठाकर कहिए। नमः पार्वती पतये, हर हर महादेव। बहुत बहुत धन्यवाद।

धर्मपाल जी

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
अप्रैल प्रथम अंक 2025 –प्रेषित डाकघर –R.M.S. चारबाग, लखनऊ –प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।